Details of Research Articles Published with the Link to Website of Journal

Sl.No.	Paper Title	Author/Teacher	Journal Name	Link to website of Journal	Link to Article/Paper
1.	Study on developmental biochemical characteristics of Leishmania donovani promastigote and inhibitoary effect of Achyranthes aspera Linn plant extract on it	Dr. Puspaa Sinha	Journal of Applied and Natural Science, 2022	https://journals.ansfoundation.org	NA
2.	Trends and Pattern of Urbanization in Bihar during 1961-2011: An Analytical Study	Prof. Brajesh Pati Tripathi	Indian Economic Journal, 2022	https://journals.sagepub.com/home/IEJ	NA
3.	Integral Democracy and Politics of Jayprakash Narayan	Prof. Brajesh Pati Tripathi	Jigyasa, 2020	http://jigyasabhu.com/	NA
4.	Asafal aur Aetihasik Prem ki tathyajanya Kalpna-Shardiya (Jagdish Chandramathur)	Dr. Sunil Kumar	PARISHEELAN, 2019	http://www.skspvns.com/About_Parisheelan.html	NA
5.	Aabhashi Lokbhasha	Dr. Amrendra Nath Tripathi	Hans, 2018	https://ugccare.unipune.ac.in/Apps1/User/WebA/ViewDetails?JournalId=101003037&flag=Search	NA
6.	Priy Kavi, Tumhate Urin Ham Nahin	Dr. Amrendra Nath Tripathi	Hans, 2018	https://ugccare.unipune.ac.in/Apps1/User/WebA/ViewDetails?JournalId=101003037&flag=Search	NA
7.	Sakh niyantran padhhati ka parimanatmak evam gunatmak addhyan	Dr. Fazal Ahmad	AD VALOREM (Journal of Law), 2018	https://www.advaloremjournaloflaw.com/	NA
8.	Bank darke prabhav ka vishlesnatmak addhyan	Dr. Fazal Ahmad	AD VALOREM (Journal of Law), 2018	https://www.advaloremjournaloflaw.com/	NA
9.	Rashtriyekrit vanijyik banko dwara prathmikta prapt kshetro ka vitt poshan	Dr. Fazal Ahmad	AD VALOREM (Journal of Law), 2018	https://www.advaloremjournaloflaw.com/	NA
10.	Prathmic kshetra ke vikas me banko ki bhumika: Ek Addhyyan	Dr. Fazal Ahmad	AD VALOREM (Journal of Law), 2018	https://www.advaloremjournaloflaw.com/	NA

ISSN : 2348-5485

AD VALOREM

Journal of Law

An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal

VOLUME : 5 ISSUE : II APRIL - JUNE : 2018

IMPACT FACTOR: 3.512 APPROVED BY UGC JOURNAL NO:41336

Patron :

Hon'ble Justice K.D. Shahi
Retd. High Court Judge
Allahabad, India

Prof. B.C. Nirmal
Ex.Vice Chancellor of
National University of Study & Research in Law, Ranchi
Ex. Head & Dean, Law School
Banaras Hindu University
Varanasi, India

Editor in Chief
Chandra Nath Singh
Law School
Banaras Hindu University
Varanasi, India

ISSN: 2348-5485

AD VALOREM

Journal of Law

An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal

(JIFE Impact Factor: 3.512, Approved by UGC Journal No. 41336)

Patron:

Hon'ble Justice K.D. Shahi

Retired Judge, Allahabad High Court, Allahabad

Professor B.C. Nirmal

Ex. Vice Chancellor of National University of Study & Research in Law, Ranchi

Former Head & Dean, Faculty of Law, Banaras Hindu University, Varanasi

Editor in Chief:

Chandra Nath Singh

B.A., LL.B. (BHU) LL.M. (RMLNLU)

UGC-JRF/SRF, Ph.D., Faculty of Law,

Banaras Hindu University, Varanasi

Mode of Citation:

(Ad Valorem), Volume 5, Issue II, 2018, <Page No.>

VOLUME: 5 ISSUE: II PART-I APRIL - JUNE 2018

Published by:

Future Fact Society, Lanka, BHU, Varanasi (U.P.) India

@ Approved By UGC

Correspondence Address:
Editor in Chief:
Chandra Nath Singh
Ad Valorem *(Journal of Law)*
Faculty of Law, Banaras Hindu University
Varanasi-221005, Uttar Pradesh, India
Phone: +919305292048, +919450248260
E-mail: ***advalorem86@gmail.com,***
chandralaw@gmail.com
Website: ***advaloremjournaloflaw.com***

Copyright /Published since 2014 @ Chandra Nath Singh ©2018

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, or [illegible] *any retrieval system of any nature without prior permission. Application for permission for other* [illegible] *copyright material including permission to reproduce extracts in other published works shall be* [illegible] *publishers. Full acknowledgement of author, publishers and source must be given. The views expressed* [illegible] *journal* ***"Ad Valorem"(Journal of Law)*** *are not necessarily the views of editorial board or publisher.* [illegible] *any member of the editorial board nor publisher can in anyway be held responsible for the view* [illegible] *authenticity of the articles, reports or research findings. Although every care has been taken to avoid* [illegible] *omissions, this publication is being sold on the condition and understanding that information given* [illegible] *journal is merely for reference and must not be taken as having authority of or binding in any way* [illegible] *authors, editors, publishers and sellers who do not owe any responsibility for any damage or loss to any* [illegible] *a purchaser of this publication or not, for the result of any action taken on the basis of this work. All disputes are subject to Varanasi jurisdiction only.*

Managing Editor:
Brijendra Nath Singh

Printed and Binding by:
Baba Binding, Lanka, BHU, Varanasi-221005, Utter Pradesh, India.

आभ्यंतर

लोक,भाषा,विश्व साहित्य और समकालीन वैचारिकी का मंच

ISSN: 2348-7771

(UGC APPROVED)

JOURNAL NO- 49304

अंक 06 भाग 04 जनवरी-मार्च 2018

संस्थापक

अखिलेश कुमार द्विवेदी

परामर्श

प्रो. अनिल राय

डॉ. सुधांशु शुक्ल

डॉ. राजेश शर्मा

डॉ. विनोद तिवारी

डॉ. रामनारायण पटेल

डॉ. वांचा पाण्डेय

पारसेन्द्र पंकज

संपादक

कुमार विश्वमंगल पाण्डेय

उप-संपादक

पंकज कुमार अग्रवाल

संपादन संपर्क

डी-1448, जहाँगीरपुरी दिल्ली-110033

ई-मेल- aabhyantar123@gmail.com

मो. 9130679861

मूल्य रु.40, वार्षिक रु.200, संस्था और पुस्तकालय रु.80 आजीवन रु.3000 सभी भुगतान मनीआर्डर, चेक, बैंक-ड्राफ्ट आभ्यंतर के नाम से किए जाएं। दिल्ली से बाहर के चेक में बैंक कमीशन के रु.35 अधिक जोड़ें। सभी पद अवैतनिक और अव्यावसायिक है। आभ्यंतर में प्रकाशित लेखकों के विचार से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं। सभी कानूनी मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

हिमांशु श्रीवास्तव के उपन्यास और यथार्थवाद

डॉ सुशील कुमार
हिंदी विभाग, बी.एन. कॉलेज,
पटना विश्वविद्यालय, पटना

हिंदी साहित्य के उपन्यास लेखन की यथार्थवादी परंपरा एवं प्रतिष्ठित उपन्यासकारों में बिहार की पावन धरती से हिमांशु श्रीवास्तव ... [illegible]

[illegible]

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 4 जुलाई-अगस्त 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की

मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

...म प्रेमा की कविता का कथ्य– डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह 947
...तीय कला में 'रसो वैसः' की अनुभूति– डॉ. अलोकना पाल एवं स्मृति कुमारी 958
...त्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता– डॉ॰ अभिषेक कुमार 964
...ड़प्पा सभ्यता : नगर निर्माण का वैज्ञानिक और ज्यामितीय विश्लेषण– डॉ॰ रूबी कुमारी 968
...लट ऐक्ट एवं सत्याग्रह का तुलनात्मक अध्ययन– डॉ॰ अर्चना कुमारी 973
प्राचीन भारत में शिक्षा के विविध आयाम– डॉ. प्रतिभा किरण 979
...भरत काल से पूर्व रस शब्द की महत्ता एवम् अर्थगाम्भीर्य– डॉ. राकेश कुमार सिंह 982
भारत में क्रांतिकारी आंदोलन की पृष्ठभूमि: एक अध्ययन– सत्यम कुमार केसरी 987
आधुनिक भारत में स्त्री शिक्षा के लिए किए गए सरकारीय अथवा व्यक्तिगत प्रयास: एक अध्ययन– डॉ॰ संतोष कुमार 994
आधुनिक भारत की राष्ट्रीय चेतना के विकास में भगिनी निवेदिता का योगदान– संगीता कुमारी 999
भारत का औपनिवेशीकरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र पर उसका प्रभाव– प्रिंस कुमार 1006
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर चंपारण सत्याग्रह का प्रभाव: एक अध्ययन– दिलीप कुमार 1012
भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का दक्षिण-पूर्व एशिया पर प्रभाव: एक अध्ययन– डॉ. अरुण कुमार निराला 1017
महात्मा गांधी का खादी-दर्शन एवं वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता– डॉ॰ अनामिका चक्रवर्ती 1021
आधुनिक भारत की जनोन्मुखी वैज्ञानिक नीति एवं गांधी विचार का संदर्भ (1900–1950 ई0)– डॉ॰ चंदना 1025
इंजीनियर्स ऑक्यूपेशनल स्ट्रेस: ए कम्पेरिजन– अनाम आनन्द 1030
नासिरा परवेज का "समागम" उपन्यास में चित्रित नारी अस्मिता– डॉ॰ फजल रहीम खान 1033
गांधीवाद का दिव्य संदेश– डॉ. दिवाकर कुमार कश्यप 1037
आदि शंकराचार्य और भक्ति आंदोलन– बलजीत तिवारी 1040
गुणालंकारतत्त्वविवेचनम्– डॉ॰ पवन कुमार ठाकुर 1043
भारत और नेपाल के बीच ऐतिहासिक विमर्श का विश्लेषण– संध्या कुमारी 1046
भारतीय शिक्षा प्रणाली और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार– डॉ॰ सुनील कुमार 1049
भारत के ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर एवं चुनौतियाँ: एक विश्लेषण– डॉ॰ राजीव रंजन सिंह 1052
बिहार के रोहतास जिला के कृषि संबंधी समस्या: एक भौगोलिक अध्ययन– कुमार पुरुषोत्तम सुमन 1057
भारत का राजधर्म और प्रशासन का सभ्यतागत विमर्श: उपनिवेशवादी दृष्टि बनाम हिन्दू दृष्टि– डॉ. अतुल कुमार मिश्रा 1061
कोरोना काल और प्रशासन: समस्या या समाधान?– डॉ. आनन्द 1068
संस्कृति की बुनियाद पर आत्म निर्भर भारत का संकल्प: कोरोना संकट के विशेष संदर्भ में– डॉ. आदित्य कुमार मिश्रा 1073
कोविड-19 संकट एवं पलायन: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ– हर्षिका श्रीवास्तव 1080
एक राजनीतिक मुद्दे के रूप में पलायन– नम्रो शरण 1085
कोविड संकट और पलायन में मास मीडिया की भूमिका– शालिनी प्रसाद 1089
कोविड-19 और प्रवासी मजदूरों की सामाजिक आर्थिक समस्याएं: मध्य प्रदेश एवं बुंदेलखंड के संदर्भ में– स्नेहा खरे 1094
भारत के संदर्भ में कोविड संकट और प्रवासन: मुद्दे एवं चुनौतियाँ– बेबी तबस्सुम 1098
कोविड संकट एवं प्रवासन: चुनौतियाँ एवं संभावनाएं– डॉ. सुरेखा त्रिपाठी 1105
समकालीन भारत एवं नेपाल में पलायन एवं चुनौतियाँ– किसलय कीर्ति 1111
कोविड-19 : श्रमिकों का विस्थापन आत्मनिर्भर भारत का सपना– डॉ. कुमारी सिंह चौहान 1115

भारतीय शिक्षा प्रणाली और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार

डॉ० सुशील कुमार

हिंदी विभाग, बीएन कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक चिंतक साहित्यकार थे। उनका चिंतक रूप उनके साहित्य में हर जगह मौजूद है, लेकिन ललित निबंधों में उन्हें अवकाश अधिक मिला है। फलतः उनकी वैचारिकता उनके निबंध साहित्य का प्रमुख हिस्सा है। वह अपने निबंधों में अनेक प्रश्न उठाते हैं, उसके हर कोने की पड़ताल करते हैं। तत्पश्चात् तार्किक और प्रगतिशील विचार प्रस्तुत करते हैं, जो भारत की परंपरा की सही पहचान कराते हुए उसकी श्रृंखला को आगे बढ़ाता है। भारत में अनेक समस्याएं रही हैं और युगानुकूल अनेक समाधान भी हुए हैं। वर्तमान समय जिस परिस्थिति के अधीन है उसमें उसके सामने चुनौतियां भी हैं। भारत की प्राचीन संस्कृति संपदा, चिंतन परंपरा और ज्ञान संपदा उन चुनौतियों का सामना करने में अत्यंत प्रासंगिक है। द्विवेदी जी अपने निबंधों में बार-बार भारतीय संस्कृति की विशेषताओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं और यह बताते हैं कि इन समस्याओं का हल अतीत में जाकर ढूंढा जा सकता है। सबसे गंभीर समस्या शिक्षा प्रणाली को लेकर उपस्थित है। मध्य युग में भी यह समस्या उत्पन्न हुई थी। मनीषियों ने बदलती हुई परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर लिया था, पिछले डेढ़ सौ वर्षों से मार्ग में बाधा पड़ी है। परिस्थिति के साथ भारतीय मनीषा को निपटने का मौका नहीं दिया गया। विदेशी विद्वानों ने अपने लाभ-लोभ को सामने रखकर इस देश के लिए एक योजना बनाई और उस योजना के सांचे में आदमी ढाले जाने लगे। यही काम [illegible] करते हैं। अब समय आया है कि बाहरी दृष्टिकोण की उपेक्षा कर हम संपूर्ण उपलब्ध साधनों का उपयोग करके हम संपूर्ण उपलब्ध साधनों का उपयोग करके बदलती हुई अवस्था के साथ अपनी शिक्षा प्रणाली का सामंजस्य स्थापित करें। हमें पुराने साहित्य में कितने प्रकार के प्रयोग मिलते हैं कि किसी विदेश प्रथा को अपनी राष्ट्रीय प्रथा मानने का बंधन स्वीकार करने की जरूरत नहीं है। केवल एक ही बात हमारी राष्ट्रीय परम्परा की देन है और हमारे [illegible] संस्कारों में अविच्छेद्य रूप से संबद्ध है-गुरु का प्राधान्य। हमें बंधी योजना और प्रणालियों पर उतना जोर नहीं देना चाहिए जितना आदर्श गुरु की खोज पर। योजनाओं के सांचे में मनुष्य को नहीं ढालना है। मनुष्य के आधार पर योजनाओं को सोचना है। इसी एक अर्थ में भारतीय शिक्षा प्रणाली को गुरुकुल प्रणाली कहा जा सकता है, इस व्यवस्था के केंद्र में गुरु का रहना आवश्यक है।

द्विवेदी जी ऐसी शिक्षा प्रणाली को उचित नहीं मानते हैं जिसमें निकाय की योजना बनाई जाती है और उन योजनाओं के सांचे में मनुष्य को ढाला जाता है। जैसा कि आजकल हो रहा है। इससे बचने की जरूरत है, मनुष्य की रक्षा के लिए मनुष्य के आदर्श पर योजनाओं को मोड़ना होगा। इसके लिए जरूरी है कि हम योजनाओं और प्रणालियों पर इतना जोर ना दें जितना आदर्श गुरु खोजने पर। देश में शांति और सुरक्षा का वातावरण तैयार करने के लिए जिन भारतीय मूल्यों की आवश्यकता होती है उनकी प्रतिष्ठा और संरक्षण के लिए विश्वविद्यालय की स्थापना की जाती है। विश्वविद्यालय मनुष्य को अंधकार से हटाकर ज्योति की ओर ले जाने के लिए संकल्प से चालित है। उसका लक्ष्य ज्ञान की साधना है। दीर्घकाल से मनुष्य सत्य की खोज में लगा रहकर, जिन महान मानवीय मूल्यों की स्थापना कर सका है, उन्हें लोकमंगल बनाने और अधिक अधिक परिष्कृत करने का काम विश्वविद्यालय करते हैं। ज्ञान से बढ़कर पवित्र वस्तु कुछ भी नहीं है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभाग ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का अनुशीलन करते हैं और उनके प्रचार के द्वारा लोकचित्त को परिष्कृत और सत्य निष्ठ बनाते हैं। यद्यपि

वर्ष –10, अंक – 1
अंक : जुलाई–सितम्बर 2020
UGC-CARE LISTED S.N. -61

ISSN NO. 2320-5733

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति की संगम

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का मंच

निदेशक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श
डॉ. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीना प्रजापति

प्रचार-प्रसार
विजय कुमार सिंह

बिहार प्रतिनिधि
डॉ. प्रभात कुमार 'प्रभाकर'

ले-आउट
शर्मा कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
किशनपुरी, नई दिल्ली-110018

प्रकाशक
एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
विहार : [illegible] गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 3000/- रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyiksrijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
ईमेल : hansprakashan68@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

अनुक्रम

पृष्ठ

- विवाह और पुनर्विवाह का वस्तुनिष्ठ सत्य : [illegible] 5
- समांतर सिनेमा : यथार्थ की अभिव्यक्ति : डॉ. रमा 7
- नाटक की दुनिया में लोक नाटकों की धमक : डॉ. [illegible] 10
- हिंदी रंगमंच का आरंभिक स्त्री-विमर्श : डॉ. [illegible] 13
- अस्तित्ववाद की अवधारणा : [illegible] कुमार 18
- भाषा और अस्मिता : [illegible] 21
- नई कहानी की वैचारिक ... : [illegible] 25
- "समकालीन सिनेमा में स्त्री मुक्ति एवं ... : डॉ. [illegible] 29
- मैत्रेयी पुष्पा के 'विज़न' उपन्यास में ... : [illegible] 32
- फुटबॉलर के रूप में एक स्त्री का संघर्ष ... : [illegible] कुमार 35
- शानी और उनका उपन्यास 'काला जल' : डॉ. [illegible] 38
- आदिवासी कविता : विविध परिवेश : [illegible] 41
- युद्ध और हिंदी कहानी : [illegible] 45
- भारतेंदु की पत्रकारिता : [illegible] ओझा 48
- गोदान में प्रेम-निरूपण : डॉ. विजय शंकर मिश्र 51
- 1942 के आंदोलन की घटनाएँ एवं : श्याम सुंदर राय 55
- स्वच्छता और पर्यावरण शिक्षा : डॉ. मनोज राय 60
- भीष्म साहनी के कड़ियाँ उपन्यास में ... : मोहित [illegible] 64
- संस्कार व मनुष्यता के परिप्रेक्ष्य में भक्तिकाल ... : [illegible] मिश्र 67
- भारत आदिमानव संबंधी की समीक्षा ... : [illegible] कुमार [illegible] 71
- शरद जोशी के निबंधों में धार्मिक विसंगतियाँ ... : [illegible] 75
- हिंदी साहित्य में इतिहास : कालविभाजन ... : डॉ. विजय कुमार 78
- हिंदी साहित्य के विकास में संस्कृत ... : डॉ. प्रभात कुमार 'प्रभाकर' 83
- 'शहीद जवां की कहानियाँ' में चित्रित ... : डॉ. [illegible] 85
- इक दिन है, ढूंढता है, उसी बेखबर ... : [illegible] 88
- आज की स्त्री, कल की संस्कृति और ... : [illegible] 92
- 21वीं सदी की कहानियों में चित्रित ... : [illegible] 98
- हरिवंश नारायण की कहानी 'सपने ... : डॉ. [illegible] कुमारी 101
- "बुलंदशहर जनपद के प्राथमिक ... : [illegible] कुमार 104
- 'ग्लोबल गाँव का देवता : आजाद ... : [illegible] कुमारी 108
- भारतीय संस्कृति और हजारी प्रसाद ... : डॉ. [illegible] कुमार 112
- मोबाइल फोन का महिलाओं के ... : [illegible] कुमारी 114

स्वामी, प्रकाशक, संपादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच. ब्लॉक, मकान नं. 189, किशनपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।

भारतीय संस्कृति और हजारी प्रसाद द्विवेदी

डॉ. सुशील कुमार

मनुष्य के विचारों, चरित्र और रूप-निर्माण में उसके परिवेश, बौद्धिक और मानसिक पृष्ठभूमि तथा परिवार का प्रभाव होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक ऐसी ही शख्सियत हैं, जिनपर भारतीय परम्परा और संस्कृति का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। उनके व्यक्तित्व में एक खास तरह की उन्मुक्तता है, जो उन्हें अलमस्त, अवधूत, फक्कड़ आदि विशेषणों से नवाजती है। आचार्य द्विवेदी स्वयं में एक परंपरा हैं, जिसका मूल स्वर उनके व्यक्तित्व में समाहित उन्मुक्त साधक द्वारा परिभाषित है।

वर्तमान समय में ऐसे व्यापक चिंतन की जरूरत है, क्योंकि संस्कृति का प्रश्न आज बहुत महत्वपूर्ण सामाजिक राजनीतिक प्रश्न बन चुका है। द्विवेदी जी को पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वे इस प्रश्न से बहुत पहले ही उलझ चुके हों। आचार्य द्विवेदी का इतिहास और साहित्य चिंतन में [illegible] प्रदेशों को जगह दी है तथा हिंदी भाषा और साहित्य को सुदूर अतीत से जोड़ा है। द्विवेदी जी 'कुछ थोड़े-से संस्कृत ग्रंथों पर आश्रित तथ्यों को ही भारतीय संस्कृति के अध्ययन का प्रधान साधन नहीं मानते। भारतीय जनता इन तथ्यों से बड़ी है। अनेक जातियों और उपजातियों की अनुश्रुतियाँ, आचार परम्पराओं और अद्भुत [illegible] का महत्त्व उनकी दृष्टि में कम नहीं है। इन बहुधा-बिखरी सामग्रियों के [illegible] में ही समाजशास्त्र और धार्मिक विकास की कथा खोजना कठिन काम है। आचार्य जी की तीक्ष्ण दृष्टि इन आवरणों को भेद कर सत्य तक पहुँच जाती है।' हिंदी के पाठकों के लिए यही कठिन कार्य द्विवेदी जी ने किया। वे पुराण, उपनिषद आदि के माध्यम से ही संस्कृति की खोज नहीं करते, उसके लिए वे आधुनिक इतिहासकारों, नृतत्वशास्त्रियों और भाषाशास्त्रियों की मान्यताओं को भी आधार बनाते हैं। इस क्षेत्र में अपने समय तक हुई खोजों से द्विवेदी जी परिचित थे। उनके निबंधों में प्रो. सिल्वाँ लेवी, लेवी के प्रिय प्रो. प्रजुलुस्की, डॉ. राखालदास बनर्जी, पं. हरप्रसाद शास्त्री, सर जॉन मार्शल आदि की मान्यताओं का उल्लेख जगह-जगह मिलता है। लेकिन वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अध्ययन का आधार केवल शास्त्र और इतिहास को ही नहीं मानते, बल्कि 'उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण आधार है भारतीय जनता। वही हमारे देश का जीवंत इतिहास है। जो कोई भी व्यक्ति इस महान जीवन स्रोत की उपेक्षा करके केवल पोथियों में अपने को सीमित रखता है, वह बड़ी भारी गलती करता है।' इसीलिए उनके साहित्य तथा संस्कृति-चिंतन में वैज्ञानिक इतिहासकारों और प्राचीन हिंदू शास्त्रों सभी के अतिरिक्त मिथकों, मेलों, रीति-रिवाजों, देशी भाषाओं, देशी साहित्य, लोक कथाओं, कहावतों, किंवदंतियों, भाषा, बोली, पहनावा आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वे भारतीय मनुष्य के किसी भी आचरण की उपेक्षा न करके उसकी गहराई तक जाने का प्रयत्न करते हैं।

द्विवेदी जी मनुष्य के सर्वोच्च चिंतन-मनन के मूर्त रूप, मंदिर, मूर्ति, चित्रकला, कविता, नाटक, संगीत, धर्म, विचारधारा को संस्कृति मानते हैं। इतिहास में जो कुछ सोचा गया या किया गया वह सब संस्कृति नहीं, बल्कि उसमें जो सर्वोत्तम है वह संस्कृति है। संस्कृति मनुष्य को पशु-सुलभ धरातल से अधिक-से-अधिक ऊपर उठाकर मानवता के सिंहासन पर दृढ़तापूर्वक बिठाती है। सर्वोत्तम चिंतन और उसका मूर्त रूप केवल भारत की ही विरासत नहीं, विश्व की विरासत है। यानी संस्कृति किसी देश-विशेष या जाति-विशेष की मौलिकता नहीं है। भारतीय संस्कृति, तमाम संस्कृतियाँ होती हुई विश्व-संस्कृति के मेल में होंगी, विरोध में नहीं। द्विवेदी जी के अनुसार, 'भारतीय संस्कृति और कोई भी अन्य संस्कृति चिरंतन सत्य की विरोधी नहीं है।' इस चिरंतन सत्य को द्विवेदी जी 'सामूहिक विवेक' कहते हैं। वे वैदिक धरातल पर एक 'स्टैंडर्ड मन' की खोज करते हैं और उसकी आवश्यकता पर बल देते हैं।

'भारतीय संस्कृति' में 'भारतीय' की सार्थकता विशेष है। द्विवेदी जी के अनुसार विश्व में भारत ने जो विशिष्ट योगदान किया है वही भारतीय संस्कृति है। जब वे संस्कृति के क्षेत्र में भारतीय योगदान या भारतीय संस्कृति का उल्लेख करते हैं तो उसका अर्थ व्यापक होता है। वे सांस्कृतिक योगदान को किसी मज़हब, कबीले या जाति तक सीमित नहीं मानते। पता नहीं कितनी जातियों ने भारतीय संस्कृति के निर्माण में योगदान किया है, सबको अपने भीतर स्थान देना अर्थात् समन्वय की संस्कृति भारत की अपनी

भारत में स्वयं सहायता समूह एवं सहकारिता समूहों का वित्त पोषण : एक अध्ययन

डॉ0 फजल अहमद*

सारांश—*भारतीय सहकारी बैंकिंग ढांचे के दो मुख्य घटक हैं। शहरी सहकारी बैंक और ग्रामीण सहकारी ऋण संस्थान। जहाँ शहरी सहकारी बैंकों का ढाँचा एक स्तरीय है, वहाँ ग्रामीण सहकारी समितियों ढाँचा जटिल है। ग्रामीण सहकारी ऋण संस्थानों के दो अंग हैं।अल्पावधि सहकारी ऋण ढाँचा और दीर्घकालीन सहकारी ऋण ढाँचा। अल्पावधि सहकारी ऋण ढाँचे के अन्तर्गत ग्राम स्तर पर प्राथमिक कृषि ऋण समितियाँ कार्य करती है, जबकि जिला स्तर पर जिला सहकारी बैंक और राज्य स्तर पर राज्य सहकारी बैंक कार्य करते हैं। अल्पावधि सहकारी ऋण समितियाँ मूलतः किसानों और ग्रामीण दस्तकारों को अल्पावधि के लिए अर्थात् 15 मास के लिए पफसल एवं कार्यकारी पूँजी के लिए ऋण देती है। ग्रामीण सहकारी समितियों का दीर्घाविधि ढाँचा राज्य स्तर पर राज्य सहकारी कृषि एवं ग्राम विकास बैंक और जिला स्तर एवं ब्लाक स्तर पर प्राथमिक सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंकों से बनता है। ये संस्थान मध्यावधि ऋण सामान्य 15 मास से 5 वर्ष की अवधि के लिए और दीर्घावधि ऋण 5 वर्ष से अधिक अवधि के लिए दिए जाते हैं।*

मुख्य शब्द—सहकारी बैंक, ग्रामीण सहकारी, ग्राम विकास बैंक, मध्यावधि, ऋण।

भारत में सहकारी आंदोलन का आरम्भ मुख्यतः इसलिए किया गया कि किसानों को कृषि कार्यों के लिए अपेक्षित पूँजी कम ब्याज–दर पर उपलब्ध कराई जा सके। अल्पकाल के लिए सहकारी उधर की व्यवस्था का संक्षेप में निम्नलिखित ढंग से संगठन किया गया है।[1]

सहकारी उधर समिति, जिसे सामान्यतः प्राथमिक कृषि उधर समिति भी कहते हैं, दस या अधिक व्यक्तियों से आरम्भ की जा सकती है। वे व्यक्ति साधारणतया एक ही गाँव के होने चाहिए। प्रत्येक हिस्से का मूल्य सामान्यतः नाममात्रा होता है ताकि गरीब से गरीब किसान भी समिति का सदस्य बन सके। सदस्यों का दायित्व असीमित होता है जिसका तात्पर्य यह है कि समिति के विपफल होने की अवस्था में उसकी सम्पूर्ण हानि का प्रत्येक सदस्य पर पूर्ण उत्तरदायित्व रहता है। इसका अर्थ यह है कि समिति के सभी सदस्यों का परस्पर निकट परिचय होना चाहिए। समिति का प्रबंध एक निर्वाचित संस्था करती है जिसके अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष रहते हैं। प्रबंध्मण्डल के सदस्य अवैतनिक होते हैं। केवल लेखाकार ही वैतनिक होता है, यह भी उसी अवस्था में जबकि समिति इतनी बड़ी हो कि उसके लिए पूर्णकालिक लेखाकर अपेक्षित हो।[2]

* एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटना सिटी, पटना

(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 13 | March 2020 | No. III

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

Integral Democracy and Politics of Jayprakash Narayan

Md. Zafar Iqbal *
*Dr. Md. Shams Tabrez Aslam***

Today, political life has become synonymous with corruption. Everyone seems to justify corruption as a worldwide phenomenon. All the politicians try to encash their service and sacrifice. Patriotism for many has become a sense of egotism lending to set-aggrandisement. But at least for a precious few it is always a mission to cleanse the age a stable of corruption, nepotism and bigotry. When occasions present themselves, they become to the forefront to resist evils, and take the side of the oppressed for their liberation. With an open mind they address the themselves to the situation. Such a person was Jayprakash Narayan. A fighter throughout his life and a man of ideology, with experience he had from the freedom struggle Jayprakash launched a campaign total revolution for integral humanism. In this paper our attempt is to delineate the personality how he contributed to the Integral humanism and politics.

Jayprakash Narayan (JP) 1902-1979 populary know as Lok Nayak was a very important leader during the national movement of India. He was founder member of Congress socialist party and figured quite prominently in the quit India movement. In a plea for reconstruction of Indian polity. Jayprakash Narayan starts with a critique of parliamentary democracy, ultimately rejects it and makes a plea for an indigenous. Indian model of democracy Jayprakash Narayan envisages a matter of fact an idea of organic democracy for India where he talks about formation of not only district and provincial communities but also of national communities with some kind of governing councils for each. This is one of the reasons why early in 1962, in several public appearance that he made, he always looked forward not only to meeting a south Asian.

---

* *Research Scholar, M.U*
** Ass. Prof. *S.G.G.S College, P.P.U, Patna*

ISSN: 2348-5485

AD VALOREM (*Journal of Law*)
An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal
Volume 5, Issue I, Part-I, October-December, 2018

CONTENTS

	SPECIAL SCHEMES AND DEVELOPMENT PROGRAMMES FO *Dr. A.K. Navin*	1-9
	DOMESTIC VIOLENCE IN INDIA: PRESENT LEGAL PROVISI.... *Dillip Kumar Behera*	10-16
	GENDER INEQUALITY IN INDIA- A CHALLENGES IN 21ST .. *Panchanan Sabat*	17-21
	PROTECTION OF CYBER DATA: ISSUES AND CHALLENGES *Abhiranjan Dixit*	22-24
	PREVENTION OF ATROCITIES AGAINST SCS AND STS: NEED FOR MORE SOCIAL MEASURES *Dr. Vineeta Singh*	25-27
	ENVIRONMENTAL PROTECTION & JUDICIAL CONSCIOUSNESS *Rakesh Kumar Pathak*	28-30
	LAND ACQUISITION AND SOCIAL SECURITY *Kaustubha Nand Joshi*	31-36
	DR. AMBEDKAR'S VISION FOR CONSTITUTIONAL.... *Dr. Prem Kumar Gautam*	37-40
	RELEVANCY OF SEPARATION OF POWERS IN WELFARE STATE *Mukti Jaiswal*	41-45
	THE MAINTENANCE OF OLD PARENTS IN INDIA: A STUDY *Vishva Nath Sharma & Dr. A.K. Navin*	46-48
	मानवीय आहार का पोषण से संबंध : एक विश्लेषण *डॉ. कुमारी प्रिया*	49-52
	स्वतंत्रता संग्राम में बिहार के किसान–मजदूर आंदोलन की भूमिका : एक... *डॉ. पंकज कुमार*	53-57
	आधुनिक कृषि : बिहार की अर्थव्यवस्था का एक बेहतर विकल्प *डॉ० सत्येन्द्र प्रसाद सिंह*	58-63
	साख नियंत्रण पद्धति का परिमाणात्मक एवं गुणात्मक अध्ययन *डॉ. फजल अहमद*	64-66
	आर्थिक विकास में महिला श्रमिकों का योगदान *डॉ चक्रपाणी हिमांशु*	67-70
	भारत में प्रशासन पर न्यायिक नियंत्रण के प्रभावशीलता की समीक्षा *डॉ. अरूण कुमार*	71-73

साख नियंत्रण पद्धति का परिमाणात्मक एवं गुणात्मक अध्ययन

डॉ. फजल अहमद*

केन्द्रीय बैंक का एक महत्वपूर्ण कार्य साख का नियंत्रण करना ही समझा जाता है। साख–नियंत्रण का यह अर्थ नहीं है कि केन्द्रीय बैंक साख का विस्तार करे ही नहीं। अर्थव्यवस्था में आवश्यकता पड़ने पर व्यापारी तथा विनियोग के लिए केन्द्रीय बैंक सदा साख का विस्तार करता ही आ रहा है। आज के युग में साख कार्य साख तथा उसके यन्त्रों के द्वारा हो रहा है, इसलिए प्रायः सभी केन्द्रीय बैंक के विधान में इसका स्पष्ट उल्लेख होता है। 1931 के बाद स्वर्णमान का पतन हो गया। उस समय से साख का नियंत्रण का उद्देश्य बाहरी नहीं रहकर आन्तरिक मूल्यों में स्थिरता रखना हो गया। अल्पविकसित देशों में कीमतों के घटने–बढ़ने का प्रभाव विनिमय पर पड़ता है और विनिमय स्थिरता आन्तरिक कीमतों को प्रभावित करती है, इसलिए केन्द्रीय बैंक साख–नियंत्रण की नीतियों द्वारा दोनों स्थायित्व आती है।

यदि वाणिज्य बैंकों की साख को नियंत्रित न किया जाय तो अल्पविकसित देशों के अर्थव्यवस्था में अत्यधिक मुद्रा–प्रसाद तथा उसके द्वारा उत्पन्न दोषों का निराकरण करना कठिन हो जाये। अधिक मुनाफे के लिए वस्तुओं को छुपाकर कीमतों को बढ़ा देना या अधिक साख के द्वारा अधिक वस्तुओं का क्रय करके दबा देना तथा फिर उन्हें ऊँचे मूल्य पर चोरबाजारी करके बेचना, ये सभी कार्य देश की मुद्रा एवं आर्थिक विकास के लिए घातक होते हैं। केन्द्रीय बैंक साख नियंत्रण के द्वारा ही इस प्रकार के कार्यों पर रोकथाम करता है और दीर्घकालीन मुद्रा–व्यवस्था को बनाये रखता है। यह भी एक कठिन कार्य है, किन्तु केन्द्रीय बैंक सम्पूर्ण मुद्रा–व्यवस्था का नियंत्रण करके देश की अर्थव्यवस्था को ठीक रखती है।

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में केन्द्रीय बैंक का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि केन्द्रीय बैंक को अनेक रूपों में अनेक उत्तरदायित्व को निभाना पड़ता है। साख–नियंत्रण एवं नियमन एवं मुद्रा–निर्गमन करना केन्द्रीय बैंक का महत्वपूर्ण कार्य है। साख की मात्रा में होने वाले परिवर्तनों का व्यापक प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। वास्तव में यह कहा जा सकता है कि मुद्रा की मात्रा का नियमन साख नियंत्रण से संबंधित है कारण यह कि मुद्रा की कुल मात्रा में मुद्रा एवं साख दोनों ही शामिल किया जाता है। कुछ विशेष लक्षण की प्राप्ति के लिए केन्द्रीय बैंक को साख–नियंत्रण का कार्य भी करना पड़ता है। जिन विशेष लक्षणों को दृष्टि में रखते हुए साख का नियंत्रण करते हैं उन्हें केन्द्रीय बैंक की मौद्रिक नीति कहा जाता है।[1] साख–नियंत्रण नीति एवं मौद्रिक नियंत्रण में कोई अन्तर नहीं है। दोनों एक ही अंग माने जाते हैं। वास्तव में साख नियंत्रण की मौद्रिक नीति (मौद्रिक नीति को मौद्रिक नियंत्रण भी कहा जाता है)। मौद्रिक नियंत्रण का संबंध केन्द्रीय बैंक के उन विभिन्न उपकरणों से होता है जिसके द्वारा वह साख–नियंत्रण करता है[2] एवं वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल मांग

---

*एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, श्री गुरु गोविन्द सिंह महाविद्यालय, पटना सिटी

ISSN: 2348-5485

AD VALOREM *(Journal of Law)*
An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal
Volume 5, Issue II, Part-I, April-June, 2018

CONTENTS

	HISTORY OF SEDITION LAWS IN INDIA AND ENGLAND: AN ANALYSIS *Anand Singh Prakash*	1-9
	RIGHT TO PRIVACY IN E-COMMERCE: ISSUES AND CHALLENGES *Deependra Nath Pathak*	10-15
	GENDER EQUALITY IN PUBLIC AND PRIVATE SECTOR BOARD IN INDIA *Dr. Urmila Verma*	16-19
	PROTECTION OF CHILDREN'S RIGHT TO EDUCATION: LAW AND POLICY IN INDIA *Dr. Adesh Kumar*	20-27
	RULE OF LAW IN INDIA *Alok Kumar Yadav*	28-34
	PROTECTION AGAINST TORTURE IN POLICE CUSTODY: A CRITICAL ANALYSIS *Punam Kumari Bhagat & Rohit Garg*	35-41
	A STUDY OF REQUIREMENTS FOR SUCCESSFUL IMPLEMENTATION OF E-GOVERNANCE PROGRAMMES *Dr. Sanjay Singh*	42-44
	RIGHTS OF AN ACCUSED WITH SPECIFIC REFRENCE TO BAIL *Kuljit singh & Amandeep Kaur*	45-51
	CAN STATISTICS REALLY IMPROVE THE QUALITY OF RESEARCH IN HOME SCIENCE? *Gunja Kumari*	52-55
	ELDER ABUSE: GROWING PROBLEM *Pooja Rani*	56-60
	HOME AND HEALTH ADJUSTMENT PROBLEMS OF ELDERLY WIDOWS IN RELATION TO THEIR RESIDENT.. *Uma Kumari*	61-64
	DECENTRALIZATION AND LOCAL GOVERNMENT: PERCEPT AND PRACTICE IN INDIA *Kuldeep Kumar*	65-69
	DEATH PENALTY: AN ANALYSIS *Deepak Kumar*	70-78
	बैंक दर के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन *डॉ. फजल अहमद*	79-81

बैंक दर के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० फजल अहमद*

बैंक दर में परिवर्तन होने से विभिन्न दशाओं में प्रभाव पड़ता है जो यथावत है–

साख का संकुचन या विस्तार–साख को नियंत्रित करने के लिए बैंक–दर में कमी अथवा वृद्धि की जाती है। यदि रिजर्व बैंक (केन्द्रीय बैंक) को यह ज्ञात होता है कि देश में मुद्रा–प्रसार की घटना उत्पन्न हो गयी है तो वह बैंक–दर बढ़ा देता है, जिससे केन्द्रीय बैंक से प्राप्त ऋण मंहगा हो जाता है। फलस्वरूप व्यापारिक बैंक भी अपनी ब्याज दरें बढ़ा देते हैं, जिससे व्यापारी अथवा ऋण लेने वाले व्यक्ति कम ऋण लेंगे तथा अपनी अतिरिक्त राशि बैंकों में जमा करने लगेंगे, जिसके फलस्वरूप साख की मात्रा में कमी हो जाती है। इसके विपरीत यदि देश में साख की मात्रा में वृद्धि करनी हो तो बैंक–दर कम कर दी जाती है। इसका प्रभाव यह पड़ता है कि व्यापारिक बैंक भी ब्याज की दर घटा देते हैं। अर्थात् बाजार–दर भी कम हो जाती है और ब्याज की दर कम होने से व्यापारी, उद्योगपति तथा सामान्य व्यक्ति बैंकों से अधिक ऋण लेते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि साख की मात्रा में वृद्धि हो जाती है।

मूल्यस्तर में कमी या वृद्धि–साख के नियमन से आन्तरिक मूल्य–स्तर भी प्रभावित होते हैं, क्योंकि साख के संकुचन के समय व्यापारिक एवं औद्योगिक कार्यों में शिथिलता आ जाती है तथा आय कम हो जाती है। आय के कम हो जाने से उपभोग में कमी आ जाती है और मूल्य–स्तर गिरने लगता है। साख का प्रसार होने के समय व्यापारियों और साहूसियों को अधिक विनियोग करने का प्रोत्साहन मिलता है, उत्पत्ति के साधनों को अधिक रोजगार प्राप्त होता है, जिसके कारण उसकी आय में वृद्धि होती है और मूल्यस्तर बढ़ने लगता है, अतः रिजर्व बैंक (केन्द्रीय बैंक) जब यह अनुभव करता है कि देश में व्यावसायिक उन्नति के लिए अधिक साख की आवश्यकता है तो वह बैंक–दर में कमी करके भव में वृद्धि करना प्रारम्भ कर देता है, परन्तु जब वह देखता है कि साख की मात्रा में अनुचित वृद्धि द्वारा मुद्रा–स्फीति की दशा आरम्भ हो रही है तो वह बैंक–दर साख में कमी करना आरम्भ कर देता है। इस प्रकार बैंक–दर मुद्रा–प्रसार और 'आन्तरिक' मूल्य–स्तर पर प्रभावी रूप से कार्य करता है।

* एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, श्री गुरु गोविन्द सिंह महाविद्यालय, पटना सिटी

ISSN: 2348-5485

AD VALOREM *(Journal of Law)*
An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal
Volume 6, Issue I, Part-IV, January-March, 2019

CONTENTS

	RIGHT TO EDUCATION AND PROTECTION OF INTERESTS Dr. Anshuman Mishra	1-4
	EQUALITY BEFORE LAW IN INDIA: A CRITICAL ANALYSIS Vipin Kumar Singh	5-6
	RIGHT TO PRIVACY AND DATA PROTECTION REGIME IN INDIA: Pinky Verma	7-11
	INDIAN JUDICIAL APPROACHOVER ENVIRONMENTAL.. Gaurav Kumar	12-17
	परम्परागत शिक्षण की वर्तमान संदर्भ में विशेषताएं धर्मेन्द्र प्रताप सिंह & डॉ0 ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी	18-21
	राष्ट्रीयकृत वाणिज्यिक बैंकों द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों का वित्त पोषण डॉ0 फजल अहमद	22-27
	गुप्तकालीन समाज और नारी : एक विश्लेषण कृष्ण कुमार	28-32
	मानवाधिकार हनन एवं पुलिस डॉं चक्रपाणी हिमांशु	33-38
	आरसी प्रसाद सिंह की रचना 'माटिक दीप' में समसामयिक जीवन की अभिव्यक्ति डॉ. संतोष कुमार झा	39- 41
	रामनिहाल गुंजन का काव्यबोध पंकज कुमार	42-45
	बच्चों के विकास में आनुवंशिक एवं वातावरण का सापेक्षिक महत्व डॉ. श्री नारायण यादव	46-48
	भारत में पंचायती राज व्यवस्था का विकास : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन डॉ. मनोरंजन प्रसाद	49-58
	प्राचीन भारतीय वैदिककालीन प्रशासन में राजा की स्थिति डॉ० मुकेश कुमार	59-63
	भवभूति एवं नाट्य–परम्परा सुनीता चन्दन	64-67
	बिहार में बालश्रम : एक अध्ययन नेहा कुमारी	68-71
	भारत में पूँजी निर्माण की समस्या : एक विश्लेषण अनिल कुमार पोद्दार	72-75
	बच्चों का मानसिक विकास डॉ. कुमारी पुष्पा	76-78
	बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में प्रभावकारी तत्व अनामिका कुमारी	79-82
	स्वतंत्रता संघर्ष में छात्रों एवं युवाओं की भूमिका डॉ. पंकज कुमार	83-86

AD VALOREM- Journal of Law: Volume 6: Issue I: Part-IV: January-March 2019: ISSN : 2348-5485

राष्ट्रीयकृत वाणिज्यिक बैंकों द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों का वित्त पोषण

डॉ0 फजल अहमद*

सारांश–

किसान अपनी अल्पावधि और मध्यावधि वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साहूकारों, सहकारी ऋण समितियों और सरकार से रुपया उधार लेता है। दीर्घावधि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वह साहूकारों, भूमि विकास बैंकों और सरकार से रुपया उधार लेता है। गाँवों में दो प्रकार के साहूकार हैं। एक वे साहूकार हैं जो खेती और साहूकारी दोनों ही कार्य करते हैं इन्हें कृषक साहूकार कहते हैं। ये मूलतः खेती करते हैं किन्तु सहायक व्यवसाय के रूप में रुपया उधार देने का भी काम करते हैं। गाँव का दुकानदार भी साहूकारी कर लेता है। इसके अलावा, एक दूसरे प्रकार के साहूकार होते हैं जिनका व्यवसाय रुपया उधार देना होता है।

मुख्य शब्द–वित्तीय, साहूकार, भूमि विकास, सरकार, व्यवसाय।

भारतीय कृषक की वित्तीय आवश्यकताओं को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है। यह वर्गीकरण इस बात पर आधरित है कि किसान को किस उद्देश्य के लिए और कितने समय के लिए ट्टण की आवश्यकता है। वे तीन वर्ग निम्नलिखित हैं-

(d) कृषक को खेती–बाड़ी घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 15 मास से भी कम समय के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरणतया, उसे बीज, उर्वरक और चारा आदि खरीदने के लिए धन की आवश्यकता होती है। जिस वर्ष फसल अच्छी हुई हो, उस वर्ष अपने परिवार का निर्वाह करने के लिए भी उसे धन की आवश्यकता हो सकती है। वे ऋण अल्पावधि ट्टण होते हैं जो साधरणतया फसल काटने पर चुका दिए जाते हैं।

([k) कृषक को अपनी भूमि में सुधार करने, पशु खरीदने और कृषि उपकरण प्राप्त करने के लिए 15 महीने से लेकर 5 वर्ष तक के मध्यावधि ऋणों की भी आवश्यकता होती है। अल्पावधि ट्टणों की तुलना में ये ऋण अधिक होते हैं और उन्हें अपेक्षाकृत अधिक समय के बाद ही चुकाया जा सकता है।

(x) कृषक को अतिरिक्त भूमि खरीदने, भूमि में स्थाई सुधार करने, ट्टण अदा करने और महंगे कृषि–यंत्रा खरीदने के लिए ऋण की आवश्यकता पड़ती है। ये ऋण 5 वर्ष से

* एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटना सिटी, पटना

ISSN :- 2348-5485

VALOREM 2018 -

Journal of Law

- सर्वोदय आन्दोलन और जयप्रकाश नारायण — 214-221
  डॉ० संजीता कुमारी
- महिलाओं के भौतिक विकास के प्रति सामाजिक सोंच — 222-223
  डॉ० रूपा कुमारी
- बिहार सूबे के नगरीकरण के विकास में धार्मिक स्थिति का योगदान — 224-228
  अनिता कुमारी
- हिन्दी ग़ज़ल साहित्य में डॉ. कुँअर बेचैन का योगदान — 229-231
  सौरभ सिंह
- विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार — 232-234
  भुवाल चौहान
- मुगलकालीन भाषाई समन्वय : एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण — 235-239
  आलोक कुमार सिंह
- उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन एवं वादन की बंदिशों का पारस्परिक सम्बंध — 240-243
  अर्चना यादव
- जातकमालायां श्लेषालङ्कारस्य विवेचनम् — 244-249
  ज्योतिकला द्विवेदी
- तिब्बत प्रश्न और दलाई लामा : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में — 250-252
  अमित कुमार चौबे
- प्राथमिक क्षेत्र के विकास में बैंकों की भूमिका : एक अध्ययन — 253-257
  डॉ० फजल अहमद
- ECONOMIC REFORMS AND INCLUSIVE GROWTH: FROM THE PERSPECTIVE OF EMPLOYMENT — 258-265
  Dhurandhar Yadav
- AN ANALYTICAL STUDY OF "LABYRINTH" IN THE STRANGE CASE OF BILLY BISWAS — 266-271
  Sujeet Kumar Singh
- THE RIGHT TO PRIVACY AND THE FUNDAMENTAL RIGHT — 272-27
  Dr. Anjali Mittal

ooo

ISSN : 2394-2886 UGC Journal Sr. No. 64786

प्राथमिक क्षेत्र के विकास में बैंकों की भूमिका : एक अध्ययन

डॉ0 फजल अहमद*

सारांश–भारत में प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों के राष्ट्रीयकरण करने का उद्देश्य बैंकिंग व्यवसाय में दूरगामी प्रभाव वाले सुधर लाना था। जुलाई 1969 के बाद से राष्ट्रीयकरण के परिणामस्वरूप भारतीय बैंकिंग में नई दिशाएँ खुली हैं तथा उसका आधर विस्तृत और गहरा हुआ है। जब से सरकार ने प्रमुख बैंकों को अपने हाथ में लिया है, सबसे महत्वपूर्ण सुधर ऋण देने की नीतियों तथा व्यवहारों में हुआ है। ऋण देने की नीतियों तथा व्यवहारों को इस तरह परिवर्तित किया गया है ताकि अर्थव्यवस्था के अब तक उपेक्षित रहे क्षेत्रों की आवश्यकताएँ पूरी हो सकें। सामाजिक नियंत्राण के प्रयोग को करने से पहले बैंकों ने कृषि तथा लघु उद्योगों को ऋण सुविधाएँ प्रदान करने की तरपफ थोड़ा सा भी ध्यान नहीं दिया था। स्वनियोजित वर्ग की विशाल जनसंख्या में आने वाले छोटे–छोटे उधारकर्ताओं को बैंकिंग प्रणाली से बिल्कुल सुविधएँ नहीं मिली हुई थीं। लेकिन बैंक राष्ट्रीयकरण के बाद कृषि, छोटे उद्योग तथा स्वनियोजित व्यक्तियों के लिए बैंकों द्वारा वित्त व्यवस्था में कापफी प्रगति हुई है और इस हेतु कई विशेष ऋण योजनाएँ आरम्भ की गई हैं। भारतीय बैंकों के समूचे दृष्टिकोण में ही परिवर्तन आ गया और परम्परागत भारतीय बैंकिंग व्यवसाय एक रचनात्मक रूप लेता जा रहा है।

मुख्य शब्द–राष्ट्रीयकरण, प्राथमिक क्षेत्रा, बैंक, कृषि, वाणिज्य।

केन्द्र सरकार तथा रिजर्व बैंक के कहने–सुनने, निदेश देने तथा मार्गदर्शन करने के परिणामस्वरूप भारतीय बैंक समुदाय ने प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को ऋण सुविधा देने के मामले में नई अवधरणाएँ, तकनीकें और कसौटियाँ अपनाई हैं। इस दिशा में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों का सारांश निम्नलिखित है।

(1) बैंक राष्ट्रीयकरण के पश्चात् प्राथमिकता प्राप्त तथा उपेक्षित क्षेत्रों के प्रति बैंकों का दृष्टिकोण बिल्कुल बदल गया है। अब बैंकर पिछड़े क्षेत्रों की मदद करने के लिए अपने आपको वचनबद्ध अनुभव करते हैं। यह परिवर्तन होना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।[1]

(2) यह धरणा रखना गलत है कि बैंकर प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को ऋण देते समय ऋण राशि की सुरक्षा तथा प्रतिभूति के सिद्धान्त को ध्यान में नहीं रखते और वे सभी उधारकर्ताओं को अन्धुन्ध ऋण देते हैं। ऐसा नहीं है। बैंकर आज भी ऋण राशि की सुरक्षा आंकते हैं क्योंकि कोई भी आधुनिक बैंकर इस बात की उपेक्षा नहीं कर सकता। लेकिन इतना अवश्य है कि सुरक्षा की अवधरणा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। परम्परागत रूप में निध्यिों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उधारकर्ता की ऐसी मूर्त आस्तियों पर प्रभार प्राप्त किया जाता है जो कि उधरकर्ता द्वारा ऋण वापसी में चूक करने पर आसानी से परिसमाप्त की जा सकें और इस तरह प्राप्त ध्न से ऋण की वसूली की जा सके।[2] अब प्रतिभूति की नई अवधरणा के अनुसार निध्यिों की सुरक्षा निम्नलिखित तरीकों से सुनिश्चित की जाती है।

* एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटना सिटी, पटना

यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत (Journal No. 41254) ISSN :-2321-4945

द्विभाषी

राष्ट्रसेवक

अंतर्राष्ट्रीय द्विभाषी शोध पत्रिका

An International Peer Reviewed Refereed Two Monthly Journal

Volume 15, No. 1 March-April 2019

Photo

संपादक
डॉ0 क्षीरदा कुमार शइकीया
श्रीमन्त शंकर अकेडमी
गुवाहटी, असम

प्रकाशन
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
गुवाहटी, रूपनगर, असम–781032

29.	कार्य योजना का निर्माण **मो0 नौशाद**	153-158
30.	Human Resources (Literacy) Development In Bhagalpur District, Bihar - A Geographical Study **Nishant Prakash**	159-167
31.	प्रेमचंद की कृत्तियाँ : साहित्य और समाज का दर्पण **डॉ0 प्रियंका कुमारी**	168-175
32.	दलितोत्थान और महराष्ट्र एवं दक्षिण भारत में दलित आंदोलन **डॉ0 रजनीश कुमार**	176-178
33.	Implementation of Second Green Revolution in Bihar **Dr. Vijay Kumar Yadav**	179-184
34.	गृहणी एवं कार्यरत महिलाओं में आहारीय आदत : एक भूमिका **रेणु रानी**	185-190
35.	भारतीय लोकतंत्र में ग्रामीण महिला सहभागिता **संजय कुमार**	191-195
36.	भारतीय राजनीति में चुनाव सुधार : लोकतंत्र की आधारशिला **नवीन कुमार**	196-200
37.	'जल संचय और रेन वाटर हार्वेस्टिंग'—एक अध्ययन **डॉ0 रवि रंजन कुमार**	201-206
38.	Poverty In India-In Covid-19 Pandemic **Dr. Sandhya Kumari**	207-210
39.	भारत में स्वयं सहायता समूह एवं सहकारिता समूहों का वित्त पोषण : एक अध्ययन **डॉ0 फजल अहमद**	211-214
40.	भारत में समाजवादी आंदोलन तथा राजनीतिक दल : एक अध्ययन **डॉ0 प्रणव प्रेमी**	215-221
41.	केन्द्र राज्य संबंधों मे तनाव के मुद्दे **विवेका नन्द पाण्डेय**	222-232
42.	सारण जिला का व्यावसायिक परिचय और स्वरूप **वीरेश कुमार राम**	233-236

ISSN : 0974-8849
दार्शनिक त्रैमासिक अभिनिर्देशित (Peer Reviewed)
UGC Care List, Group-I : Recently Added Journals, Sl. No. -4
वर्ष-66, अंक-2, अप्रैल-जून 2020

उत्तर राम चरित में वर्णित वर्ण व्यवस्था

डॉ. ज्योतिशंकर सिंह *

वर्ण शब्द की व्युत्पत्ति है संस्कृत के वृञ वरणे अथवा वरीय धातु से हुआ है जिसका अर्थ–चुनना या वरण करना। संभवतः शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से वर्णन से तात्पर्य वृत्ति से है किसी व्यवसाय के चुनने से है। अतः यह स्पष्ट है कि वर्ण उस सामाजिक वर्ग की ओर संकेत करता है जिसका समाज में विशिष्ट कार्य एवं स्थान है जो अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण समाज में अपने हितों की स्थिति को सुरक्षित रखते हुए अपनी महत्ता को प्रातिपादित करता है। चारों वर्णों का नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास परस्पर सामंजस्य एवं समन्वय पर आधारित था। सभी मनुष्य परस्पर सहयोग से सहजता पूर्ण अपने सम्पूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते थे जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का कल्याण होता था। उत्तर रामचरित में इन वर्णों के व्यवसायों को भी नैतिकता की दृष्टि से देखने का नाटककार ने प्रयत्न किया है।

वर्ण व्यवस्था

भारत में वर्ण व्यवस्था का अपना एक विशिष्ट स्थान है तथा उसका अस्तित्व भी अनादि है। भारत का समाज वैदिक युग से निश्चित कर्मों के अनुसार आज तक विभिन्न वर्णों में विभाजित है। सभी वर्णों का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र की उन्नति कर उनका विकास करना था। समाज में वर्ण एवं धर्म के कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करने से चातुर्वर्ण्य, समष्टि रूप समाज और

* एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटनासिटी, पटना।

ISSN 0974-8849
दार्शनिक त्रैमासिक अभिनिर्देशित (Peer Reviewed)
UGC Care Listed Journal : Group-I, Sl. No. - 4
वर्ष-68, अंक-4, अक्टूबर-दिसम्बर, 2022

योगीराज अरविन्द के साहित्यों में वर्णित अद्वैत योग

डॉ. ज्योतिशंकर सिंह *

योग भारतीय दर्शन की अत्यन्त प्राचीन संपति है। कहते हैं योग सिद्धान्त इतना पुरातन है जितना कि ब्रह्मा। प्राचीन भारत से ही यह विचार चलता आया है कि हम साधना द्वारा ऐसी भौतिक और मानसिक सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं जो साधारणतया मनुष्यों में नहीं पाई जाती तथा शरीर और मन के संयम के द्वारा हम दुःखों से छुटकारा पा सकते हैं। ऋग्वेद में समाधि के महत्व के संबंध में अपरिपक्व विचार पाए जाते हैं। उपनिषदों ने ध्यान तथा एकाग्रता पर बल दिया है तथा योगाभ्यास के ज्ञान की आंतरिक खोज बताया है। कठोपनिषद् में योग की उच्चतम अवस्था का वर्णन करते हुए कहा गया है कि इसमें इन्द्रियों को मन तथा बुद्धि के साथ सर्वथा शान्त भाव में लाया जाता है। उपनिषदों तथा गीता में आत्मा के विषय में कहा गया है कि वह अपनी सांसारिक तथा पापमय अवस्था में सर्वोपरि आत्मा से पृथक तथा विरत रहती है। यह पृथकत्व ही सभी पापों और दुःखों की जड़ है। इससे छुटकारा पाने के लिए हमें आध्यात्मिक एकत्व अर्थात योग को प्राप्त करना चाहिए। वस्तुतः भारतवर्ष में आत्मानं विद्धि का उद्घोष वैदिक काल से ही किया गया है।

अरविन्द का पूर्णयोग और अद्वैत वेदान्त–

अद्वैत वेदान्त के अनुसार एकमात्र ब्रह्म ही सत् है तथा इसके अलावा सभी अज्ञान तथा भ्रम या विवर्त है। परन्तु श्री अरविन्द के पूर्णयोग में ब्रह्म भी सत्य और जगत जो ब्रह्म की अभिव्यक्ति है भी सत्य है। जगत को ब्रह्म

* *विभागाध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, एस.जी.जी.एस कॉलेज, पटना सिटी*

ISSN 0974-8849
www.abdpindia.net

दार्शनिक त्रैमासिक

वर्ष-65
अंक-3
जुलाई-सितम्बर, 2019

अखिल भारतीय दर्शन-परिषद्

दार्शनिक त्रैमासिक
वर्ष-65, अंक-3, जुलाई-सितम्बर, 2019
ISSN: 0974-8849
अभिनिर्देशित

गाँधी का समाजवाद

डॉ॰ ज्योतिशंकर सिंह*

गाँधी जी द्वारा अवधारित समाजवाद पर विचार करने के क्रम में कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों पर विचार करना आवश्यक है। गाँधी जी का समाजवाद उनके लिए सहज है, किसी किताब से उधार लिया हुआ नहीं है।[1] सहज का अभिप्राय चिन्तन, अनुभूति एवं जीवन दृष्टि की भारतीय पीठिका से संयुक्त होना है जो पश्चिम से बहुत भिन्न है। यदि कहीं उन्होंने समाजवाद का वर्णन किया है तो अपनी विशिष्ट पद्धति में, अपनी असाधारण शब्दावली में, जिसे भारतीय जनता आत्मसात् कर सके। गाँधी जी ने सदा भारतीय प्रतिभा के अनुरूप ही आत्मा-भिव्यक्ति की है। गाँधी जी मुख्यतः व्यावहारिक व्यक्ति थे, गीता के शब्दों में कर्मयोगी थी। गीता के इस कथन का कि 'व्यवसायी बुद्धि एक दिशा में होती है।[2] वे अक्षरशः अनुगमन करते थे। उन्होंने कहा है, 'सत्याग्रह विज्ञान की मूल प्रकृति ही साधक को अपने अगले कदम से अधिक देखने से रोक देती है।' स्वतंत्रता संग्राम के उनके एक सहयोगी डॉ॰ पट्टाभि सीतारमैया के अनुसार, 'उनके लिए मुख्य है दिशा, लक्ष्य नहीं, साधना, सिद्धि नहीं।' तथापि उन्होंने भविष्य के बारे में संकेत दिये थे। समाजवाद के सम्बन्ध में भी यही स्थिति है। महान् समाज चिन्तक होने के नाते उन्होंने समाजवाद के बारे में भी अपनी राय प्रकट की है।

गाँधी जी के समाजवाद के सम्बन्ध में गलतफहमी पैदा करनेवाली एक और बात उनका रामराज्य है। वास्तव में बहुत काल तक उन्होंने रामराज्य की धुँधली धारणा को स्पष्ट करने का विशेष प्रयास नहीं किया। साधारण तौर पर टॉल्सटाय की तरह उन्होंने वैयक्तिक आत्मोन्नति पर ही जोर दिया था। इतिहास हमें बताता है कि रामराज्य में समाजवाद नहीं था। अपनी अस्पष्ट धारणा को ठोस राजनीतिक, आर्थिक एवं नैतिक शब्दावली में अभिव्यक्त किया है जहाँ रामराज्य

* राजनीतिशास्त्र, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटनासिटी।

Journal of Applied and Natural Science
14(4), 1542 - 1551 (2022)
ISSN: 0974-9411 (Print), 2231-5209 (Online)
journals.ansfoundation.org

Research Article

Study on developmental biochemical characteristics of *Leishmania donovani* promastigote and inhibitory effect of *Achyranthes aspera* Linn plant extract on it

Shrikant Kumar
PG Department of Biotechnology, Magadh University, Bodh Gaya- 824234 (Bihar), India
Puspaa Sinha
Department of Botany, SGGS College, Patna City, Patliputra University, Patna (Bihar), India
Akhtar Parwez
PG Department of Biotechnology, Magadh University, Bodh Gaya- 824234 (Bihar), India
Birendra Kumar
PG Department of Biotechnology, Magadh University, Bodh Gaya- 824234 (Bihar), India
Kumar Lav Kush Tarun
PG Department of Biotechnology, Magadh University, Bodh Gaya- 824234 (Bihar), India
Sudhanshu Kumar Bharti*
Department of Biochemistry, Patna University, Patna-800005, Bihar, India

*Corresponding author. E mail: sudhanshu_bharti@rediffmail.com

Article Info
https://doi.org/10.31018/jans.v14i4.3944
Received: August 17, 2022
Revised: December 11, 2022
Accepted: December 15, 2022

How to Cite
Kumar, S. *et al.* (2022). Study on developmental biochemical characteristics of *Leishmania donovani* promastigote and inhibitory effect of *Achyranthes aspera* Linn plant extract on it. *Journal of Applied and Natural Science*, 14(4), 1542 - 1551. https://doi.org/10.31018/jans.v14i4.3944

Abstract
Leishmania donovani is an obligatory intracellular digenetic parasite transmitted by insects, causing serious global health problems as it is endemic to most developing countries. Extensive use of antimony compounds as drugs poses high toxicity and cost; therefore, herbal medicine has identified a position. This study explored the developmental and biochemical characteristics of *L. donovani* promastigote and the effect of ethanolic extract of *Achyranthes aspera* Linn (*Amaranthaceae*) plant on it. The parasites were incubated at 2.5×10^6 cells/well for 72 h at 23 °C in the presence of various concentrations of extract (µg/mL) dissolved in 1% dimethyl sulfoxide (DMSO) with sterile phosphate-buffered saline and 1% DMSO as negative controls and meglumine antimoniate as positive control. Friedman's repeated measures analysis showed that 96hr of development is the junction point in promastigotes ontogeny. Post 96hr, it grows with a long stationary phase with higher enzymatic activities of add phosphatase, superoxide dismutase and glutathione (oxidized and reduced). Total protein estimated showed a linear relationship ($R^2 = 0.999$). Phytochemical screening of the plant extract showed the presence of alkaloid, flavonoid, fixed oil and fats, saponin, tannin and phenolic compounds. It showed an effectual free radical scavenging in the 2,2-diphenyl-1-picrylhydrazyl (DPPH) assay with an inhibitory concentration IC_{50} value of 61.70 µg/ml. At a concentration of 250 µg/mL, the plant extract completely inhibited the promastigotes *in vitro* while at 50 µg/mL and 100 µg/mL, the survival level declined by 25-50%. These findings corroborate the ethnopharmacological use of this plant for the treatment of leishmaniasis caused by *L. donovani*.

Keywords: *Achyranthes aspera* Linn, Inhibitory concentration, *Leishmania donovani*, Phytochemicals, Promastigote

INTRODUCTION

Leishmaniases are a group of diseases caused by dimorphic protozoan parasites from more than 20 *Leishmania* species (protozoa; kinetoplastida). There are three main forms of the disease: *cutaneous leishmaniasis* (most common form), *mucocutaneous leishmaniasis* (most severe form) and *visceral leishmaniasis* (most disabling form) which is also known as kala-azar. These parasites are transmitted to humans by biting an infected female phlebotomine sandfly, a tiny 2 to 3 mm long insect vector. It is prevalent throughout the tropical and sub-tropical regions of Africa, Asia and Europe and has been considered one of the six entities on the World Health Organization tropical disease research (WHO-TDR) list of most disabling diseases (Thakur, 2020). In 2018, about 90 countries or territories were considered endemic for, or had previously reported

This work is licensed under Attribution-Non Commercial 4.0 International (CC BY-NC 4.0). © : Author (s). Publishing rights @ ANSF.

Print ISSN No : 2277-8179 | Impact Factor : 5.862

Certificate of Publication

This is to certify that

Mr./Mrs./Ms./Prof./Dr. **Puspaa Sinha**

has contributed a paper as author/ Co-author to

IJSR - INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC RESEARCH

A Peer Reviewed, Referred, Refereed & Indexed International Journal

Title "**The developmental and biochemical features of Leishmania donovani promastigote and their repression by Datura stramonium plant extract**"

and has got published in Volume **11**, Issue **09** **September-2022**

The Editor in Chief & The Editorial Board appreciate the

Intellectual Contribution of the author/co-author

Executive Editor | Editor in Chief | Member, Editorial Board

असफल और ऐतिहासिक प्रेम की तथ्यजन्य कल्पना–''शारदीया'' (जगदीश चन्द्रमाथुर)

डॉ0 सुनील कुमार*

''शारदीया' में इतिहास यहाँ माथुर की निजी अनुभूति और कल्पना पर आधारित है, तभी 'शारदीया' का लक्ष्य इतिहास से अधिक ऐतिहासिक तथ्यजन्य कल्पना है। जिसमें स्थूल ऐतिहासिकता की अपेक्षा–अनुभूति और कल्पना पर आत्म परक अभिव्यक्ति है। जिसे नाटककार ने 19वीं शताब्दी के मराठा इतिहास की कुछ घटनाओं के सहारे विकसित किया है। 'इतिहास की मर्मस्पर्शी यथार्थता, काव्य की मनमोहक, रमणीयता और नाटक की प्रभुविष्णुता की त्रिवेणी का समाहार इस नाटक में सफलता के साथ हुआ है।''[1]

'शारदीया' के संदर्भ में एक कलाकार के तौर पर अपनी अभिप्रेरणाओं का जिक्र करते हुए माथुर साहब ने लिखा है–मुझे नागपुर म्युजियम में एक असाधारण वस्त्र देखने को मिला। उसकी लम्बाई पाँच गज से कुछ अधिक यानी एक साड़ी के बराबर है, किन्तु वजन केवल पाँच तोला है। कपड़े की बुनाई अत्यन्त महीन है। म्यूजियम के अधिकारियों ने इस वस्त्र को शीशे से मंडित एक केस में प्रदर्शित कर रखा है। केस के नीचे इस असाधारण वस्त्र के निर्माण की कथा अंकित है। उसके अनुसार इस साड़ी या वस्त्र को ग्वालियर किले में एक तहखाने में बुना गया और इतनी बारीक बुनाई के लिए बुनकर ने अपने अंगूठे के भीतरी नाखून में सूराख कर लिया था, ताकि वह ठरक ठरकी यानी 'शटल' का काम दे सके। बुनने वाले व्यक्ति राष्ट्रद्रोह के अपराध में दौलत राव सिंधिया की आज्ञा से सन् 1975 में उस इतिहास प्रसिद्ध युद्ध में बन्दी बना लिया गया था, जिसमें मराठों ने अपनी संकुचित शक्ति से हैदराबाद के निजाम को बुरी तरह पराजित किया था। पहले तो सिंधिया ने उसे प्राणदण्ड की आज्ञा दी थी, किन्तु बाद में ग्वालियर के सरदार जिन्सेवाले के विशेष अनुरोध पर उसे आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया।'[2]

माथुर साहब आगे लिखते हैं– 'मन और तन को अंधेरे और घुटन के बन्धन में जकड़ने वाले उस कारागार में इस कलाकार बन्दी को किस अजस्त्र

*हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

लोक गीतों में गुजराती गंध — 205-210
डॉ मंजु तँवर

स्वतंत्र निदेशक के कर्तव्यों का कम्पनी अधिनियम, 2013 के परिप्रेक्ष्य में एक संक्षिप्त अवलोकन— 211-216
प्रभुनाथ

Food Security in Sub-Saharan Africa — 217-224
Dr Rashmi Kapoor, Dr Gajendra Singh

Changing Pattern of Urbanization in Punjab — 225-230
Ravi Shekhar

भूमण्डलीय तापमान : खतरे में धरती — 231-234
डॉ० महेन्द्र सिंह चौहान

सल्तनत काल की शासन व्यवस्था — 235-240
प्रमोद कुमार शर्मा

संत रविदास का बेगमपुरा शहर : आज के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता — 241-244
डॉ. विमल कुमार लहरी

असफल और ऐतिहासिक प्रेम की तथ्यजन्य कल्पना— "शारदीया" (जगदीश चन्द्रमाथुर) — 245-252
डॉ० सुनील कुमार

दूध एवं इसका पौष्टिक महत्त्व — 253-256
डॉ० विजयालक्ष्मी, वीणा कुमारी

दलित जातियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि — 257-262
अनिल कुमार

हिन्दी काव्य में अनुवाद की समस्याएँ — 263-270
डॉ. आशिष कुमारी कान्ता

भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और गुजराती भक्त कवि नरसिंह मेहता — 271-276
सावन कुमार

ISSN 0972-1894

VOLUME- 76 NUMBER- 83 Jan-Mar, 2018

The Hindustan Review

बुद्धम् शरणम् गच्छामि

BCARDS

A Peer Reviewed Journal of BCARDS

A Quarterly Journal of Buddist Centre for Action Research and Development Studies

UGC Approved Journal No- 62908; Social Science : Arts and Humanities, Serial No- 278

15.	असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की समस्यायें एवं समाधान: एक अध्ययन	कुमारी सुनीता	83-88
16.	भारत में लोहार जनजाति का उद्भव: एक अध्ययन	कविता कुमारी	89-95
17.	बिहार विधानसभा के चुनावों में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	रूमा कुमारी	96-102
18.	राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षा की भूमिका	अमरेन्द्र कुमार	103-108
19.	निर्यात-आयात नीति (2002-2007)- एक समीक्षा	डॉ० कमलेश कुमार	109-114
20.	गिरिजा कुमार माथुर के व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम	प्रो० (डॉ०) नागेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ० नवीन कुमार	115-122
21.	राक्षसों की उत्पत्ति	डॉ० राजाराम नागमणि	123-128
22.	''महिला स्वयं सहायता समूह'' की गरीबी निवारण में भूमिका	डॉ० शिव कुमार	129-137
23.	पहला राजा (1951) जगदीश चन्द्र माथुर	सुनील कुमार	138-146
24.	TRAITS OF MYSTICISM IN THE GUIDE	Sunil Kumar	147-150
25.	ABOLITION OF ZAMINDARI SYSTEM IN INDIA	Dr. Deepak Prakash Vardhan	151-153
26.	LIBERALISED ECONOMIC POLICY AND RESTRUCTURING OF EDUCATION PLANNING	Dr. Kamlesh Kumar	154-158
27.	COLLECTIVE RESPONSIBILITY: IN THE CONTEXT OF PARLIAMENTARY SYSTEM	Dr. Dilip Kumar	159-161
28.	MINISTRY OF HOME AFFAIRS: COMPOSITION AND FUNCTION	Dr. Sunil Kr. Mishra	162-165
29.	ROLE OF ADMINISTRATIVE TRIBUNALS IN INDIA	Animesh Kumar	166-169
30.	BUSINESS FINANCE IN MULTINATIONAL CORPORATIONS (COMMERCE)	Dr. Md.Aslam	170-174
31.	IRON AND STEEL INDUSTRIES OF BIHAR UPTO 1947	Dr. Sanjay Kumar	175-179

The Hindustan Review, Vol., 76, Number-83, Jan-Mar,2018, ISSN 0972-1894 | 138

पहला राजा (1951) जगदीश चन्द्र माथुर

सुनील कुमार
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
sk9631549561@gmail.com

'पहला राजा' मिथक पर आधारित एक नाटक है। इसमें न सिर्फ शिल्प के स्तर पर बल्कि कथा और कथ्य के स्तर पर भी परम्परा का परीक्षण करते हुए प्रयोगधार्मिता को प्रश्रय दिया गया है। 'पहला राजा' समाज और राज्य के बीच सम्बन्ध, राज सत्ता के स्वप्न, और उससे जुड़े व्यक्ति के अन्तर्द्वन्द को परिभाषित करने की कोशिश करता है। इसमें वैदिक युग में पहले राजा के उदय और उससे उत्पन्न समस्याओं के द्वारा आज के अंतर्विरोधों और उलझनों को देखा समझा गया है।[1] डॉ. सिद्धनाथ कुमार सही लिखते हैं कि 'नाटककार के मन में आधुनिक जीवन की कुछ समस्याएँ रही हैं जिन्हें उसने इस नाटक के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहता है – 'क्या है मनुष्य और प्राकृतिक साधनों का सम्बन्ध है ? किस प्रकार वह प्रकृति से जूझकर उसे अपने उपयोग के योग्य बना सकता है ? क्या रही है समाज के विकास में वर्णसंकरता की देन ? खून की मिलावट क्या सचमुच विरोध का विषय है ? समुदाय और राजसत्ता के बीच सम्बन्धों की बुनियाद क्या है ? पौरुष की स्फूर्ति के मूल में काम की प्रेरणा का क्या महत्व है ? इस तरह आजकल की नारेबाजी, आन्दोलन, वर्गों की पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष और संघर्ष, स्वार्थान्ध लोगों द्वारा जनमत की उपेक्षा आदि से सम्बन्धित समस्याएँ भी है।[2] ये समस्याएँ निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है और नाटककार को पौराणिक–प्रसंगों में इसके लिए पर्याप्त अवसर मिले हैं। डॉ० जयदेव तनेजा भी रेखांकित करते हैं कि 'नाटककार ने कुछ मुलभूत प्रश्नों को–ऐसी परिस्थिति जिसमें कर्म में उपलब्धि की जगह उपचार की तलाष की जाती है, मनुष्य और प्रकृति के साधनों का आपसी रिश्ता, समाज के विकास में वर्ण संकरता की देन, समुदाय और राजसत्ता के बीच सम्बन्धों की बुनियाद, महत्वाकांक्षी पुरुष में कर्म की स्फूर्ति और काम की लालसा का सहज सह अस्तित्व– कुछ पौराणिक वादों और प्रसंगों में मिले प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।[3] कोई भी कला चूँकि यथार्थ का अन्वेशण अपने खास कलात्मक तरीके से करती है और कोई कलाकार अपनी सौन्दर्यानुभूति के स्तर और तरीकों से ही यथार्थ को पकड़ता है, 'पहला राजा' में पौराणिक प्रसंगों के निवेश का एक स्वर और माथुर साहब का अपना एक विशिष्ट रूख है। 'पहला राजा' की भूमिका में वे लिखते भी हैं – 'मुख्य पात्र और प्रसंग में वैदिक और पौराणिक साहित्य से लिये हैं। लेकिन इसलिए ही यह नाटक पौराणिक नहीं कहा जा सकता पृष्ठभूमि के कुछ अंश और सूत्र मोहनजोदड़ो–हड़प्पा सभ्यता की

Reg. No. V-41950

ISSN : 2277-2723
Impact Factor : 5.525

UNIVERSAL REVIEW

International Multidisciplinary Peer Reviewed Bi Annual Research Journal

U.G.C. Sr.No.-118 Journal No.-40792

Vol.-X No.-1 Jan.-June-2019

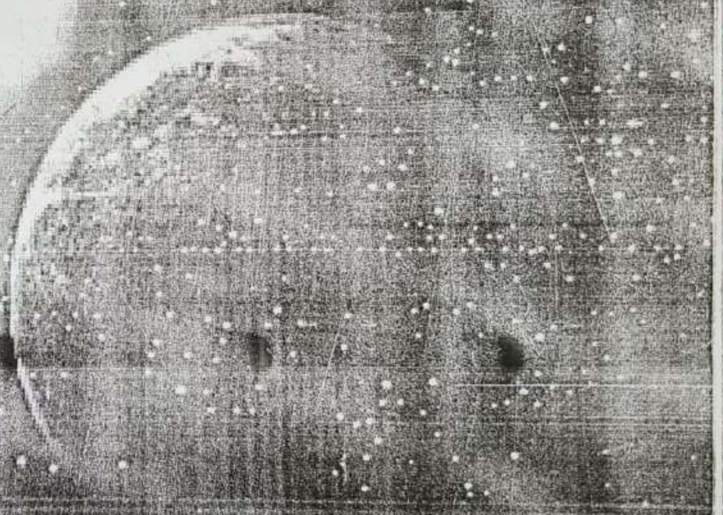

SITBS, Kolkata (W.B.) INDIA

प्राचीन भारतीय अन्तर्राज्यीय सम्बन्धः एक अनुशीलन 245-252
राहुल कान्त कुमार

डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा दलितों की स्थिति सुधारने के उपाय 253-258
डॉ0 अजय यशराज

प्रतिनिधि संस्थाओं में महिलाओं की भागेदारी की ओर बढ़ते....... 259-266
डॉ0 प्रीशिका राज

कमलेश्वर की कहानियों की प्रासंगिकता 267-270
डॉ0 सुनील कुमार

20वीं सदी के राष्ट्रीय आंदोलन में कृषकों पर पड़े........ 271-276
केशव कुमार राय

स्मृतियों के अध्ययन की अवश्यकता महत्व एवं वर्ण विषय 277-284
डॉ. प्रीति कुमारी

स्त्री–विमर्श की जीवंत कहानी : 'काली आंधी' 285-290
डॉ. राजेन्द्र यादव

आसियान और सार्क संगठन में भारत की उभरती हुई राजनीतिक....... 291-294
आशुतोष कुमार

दरभंगा जिला के पंचायती राज संस्थाओं में महिला......... 295-300
डॉ. बैद्यनाथ राम

सुरा I बेसिन का अनोखा स्थल रूप, वहाँ की विशेष संरचना............ 301-304
डॉ केशव प्रसाद यादव, रोहित कुमार, डॉ० मुन्ना कुमार ज्योति

कश्मीर : 'अभिन्न अंग' बनाम 'अनुच्छेद 370' का विरोधाभास 305-310
डॉ0 प्रभात कुमार सिंह

स्वाधीनता आन्दोलन में बिहार के समाजवादी नेता.......... 311-318
प्रमोद कुमार शर्मा

पूर्वी भारत का प्रथम ज्ञात ताम्रपाषाणिक सांस्कृतिक परिक्षेत्र........ 319-326
डॉ० मो० शरफ्राज आलम

बिहार में सामाजिक–आर्थिक प्रतिद्वन्द्विताएँ एवं समायोजन1905.1995 327-332
डॉ० अजीत कुमार

कमलेश्वर की कहानियों की प्रासंगिकता

डॉ0 सुनील कुमार*

प्रगतिशील लेखक संघ (1936) के प्रथम अधिवेशन में प्रेमचंद पद से बोलते हुए उन्होंने वैचारिक संघर्ष को महत्व देते हुए कला को कर्म के संदेश से जोड़ा था। कमलेश्वर के समक्ष प्रेमचंद की मजबूत विरासत थी। वे प्रेमचंद की तरह ही इतिहास की प्रगतिशील वैचारिकता के साथ कलानुक्रम से अपने को परिनीति और संशोधित करते रहें तथा समाज और समूह के लिए अनुपयोगी अंशों को नकारते हुए सच्चाई को स्वीकारते गये हैं। मधुकर सिंह ने इनके बारे में ठीक ही लिखा है, "कमलेश्वर के स्तर और क्षेत्र क्या रहे हैं, इसका सही ब्यान इनकी कहानियाँ ही खुद देती हैं।"[1] कमलेश्वर ने बौद्धिक और संवेदनात्मक स्तर पर कहानी की प्रेमचंद परम्परा को नये जीवन संदर्भों की ओर अभिमुख किया।

कमलेश्वर की स्वातंत्र्तोत्तर कहानी के प्रथम दौर में "खीचंते कस्बे का आदमी', 'गर्मियों के दिन', 'एक अश्लील कहानी", पीला गुलाब' आदि कहानियाँ लिखी। इन कहानियों की रचना काल सन् 1952 से सन् 1959 तक है। इनमें कहानीकार ने उत्तर प्रदेश के मैनपुरी और इलाहाबाद के परिवेश को चित्रित किया है। इन कहानियों में स्वतंत्रता से पूर्व के पारम्परिक आदर्श तथा पिछड़े हुए मूल्यों के प्रति घोर असहमति का स्वर है। नयी कहानी पत्रिका के सम्पादन काल में कमलेश्वर ने दूसरे दौर की कहानी लिखी--"दिल्ली में एक मौत", "जार्ज पंचम् की नाक", "खोई हुई दिशा में", "पराया शहर", "एक रूकी हुई जिन्दगी", "तलाश", "दुखभरी दुनिया", "जो लिखा ही नहीं जाता", "एक थी विमला", "अपने देश के लोग", "मांस का दरिया", "युद्ध" इत्यादि। इन्हीं कहानियों के समांतर निहायत वैतिकता, कुंठा, मानसिक विलास, पराजय और जिन्दगी के निर्णय से अलग अनेक कहानियाँ लिखी जा रही थी। भारत पर चीनी आक्रमण तथा भारत–पाक युद्ध के यातनापूर्ण परिणामों से मानवीय सोच में बदलाव आया। अशिक्षा, गरीबी, वर्गभेद, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता और भ्रष्ट शिक्षा प्रणाली के कारण आम आदमी की लड़ाई में भी तेजी आती गयी। फलस्वरूप 1965–66 के आसपास की कहानी आम आदमी की संघर्षशील चेतना से जुड़ती चली गयी। कमलेश्वर की "या कुछ और", "नागमणि", "आधी दुनिया", "इतने अच्छे दिन आदि इसी दौर की महत्त्वपूर्ण कहानियाँ हैं। इनमें रचनाकार ने सामाजिक और अधिक दबावों के बीच व्यक्ति के दारूण और विसंगत संदर्भों को समझने की सफल कोशिश की है।

*हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

Vol-X No.-2-2019 ISSN 2231 1483

Wisdom Herald

International Multidisciplinary Peer Reviewed Quarterly Research Journal

U.G.C.- S.N0. 25086 U.G.C.Journal No. 40878

Vol -X No.-2 April-June-2019

Editor in Chief
Prof. Shyam Nath Mishra
Executive-Editor
Dr. Anjani Kumar Mishra
Editor
Dr. Aparna

Published by
Society for Indo-Tibetan Buddhist Studies Delhi
Approved by U.G.C., New Delhi

अल्पसंख्यक दर्जे का निर्धारण सामयिक विमर्श — 551-556
डॉ0 प्रभात कुमार सिंह

हिन्दी और भोजपुरी भाषाओं में कारकीय परसर्ग — 557-562
डॉ0 आनंद प्रकाश गुप्ता

दलित समस्या : राष्ट्र समस्या (आरक्षण दुष्प्रचार के रूप में) — 563-568
डॉ0· देवेन्द्र कुमार

पटना जिला के दलित महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज की भूमिका — 569-574
रबिन्द्र कुमार

बिहार की जनजातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक के विभिन्न पहलूओं के आधुनिक परिप्रेक्ष्य — 575-578
प्रियंका कुमारी

प्रसादोत्तर नाट्य परिदृश्य और जगदीश चन्द्र माथुर — 579-586
✓ डॉ0 सुनील कुमार

प्राचीन काल में स्त्री शिक्षा : एक अध्ययन — 587-592
गुड़िया कुमारी झा

स्मृतियों में राजनैतिक व्यवस्था का संक्षिप्त परिचय — 593-600
डॉ. प्रीति कुमारी

विषय:–वर्तमान शिक्षा और वेद में वैदिक राष्ट्रवाद और महर्षि दयानन्द का (वैज्ञानिक पद्वति) — 601-602
सुश्री नीतू कुमारी

राजभाषा हिन्दी का सामाजिक पक्ष — 603-608
प्रिया कुमारी

21वीं शताब्दी में महात्मा गाँधी के सर्वोदय दर्शन की प्रासंगिकता — 609-612
डॉ० कृष्ण कन्हैया

An Economic Assessment Of India — 613-618
Dr. Awadhesh Kumar Mishra

Impact of Micro Finance Policy And Practices On
Indian Economy Concerning With R...

प्रसादोत्तर नाट्य परिदृश्य और जगदीश चन्द्र माथुर

डॉ0 सुनील कुमार*

किसी भी सृजनशील कलाकार के लिए अपने और अपने परिवेश से प्रभावित होना संभव है। एक जीवित परम्परा को संवेदनशील इकाई होने के कारण कलाकार अपने परिवेश से प्रभावित तो होता ही है, आगे उसे प्रभावित भी करता है। वह एक तरफ सामयिक प्रश्नों से जूझता है तो दूसरीं तरफ मानव–जीवन के लिए शाश्वत–मूल्यों की तलाश और स्थापना का प्रयास भी करता है। नाटककार के पास सामयिकता और शाश्वतता दोनों को बिल्कुल एक स्तर पर साधने की अनिवार्यता–सी होती हैं। वह किसी भी हालत में मात्र भविष्य के भरोसे वर्तमान की उपेक्षा कर अपनी रचनाओं को जीवन सामर्थ्य नहीं कर सकता है।

प्रसादोत्तर नाट्य परिदृश्य में दो धारायें नाटक में कार्य करती रही। पहला राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक चेतना की धारा और दूसरा यथार्थवादी चेतना और समस्या नाटक की चेतना। इस समय तक पौराणिक नाटकों के प्रति रूझान कम हुआ। राष्ट्रीय चेतना पर नाटक लिखने वालों में थे–हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविन्द दास और उदय शंकर भट्ट। इन्होंने सांस्कृतिक पुनरुत्थान की चेतना से युक्त इन नाटककारों ने समन्वयवादी दृष्टि और नैतिक मूल्यों पर बल दिया। यथार्थवादी समस्या प्रधान नाटकों में व्यक्तिमन के द्वन्द्व, स्वच्छन्द प्रेम, विवाह समस्या, मूल्यों के विघटन आदि प्रमुख विषय रहें। उपेन्द्र नाथ अश्क, बेचन शर्मा उग्र, पृथ्वीनाथ शर्मा, हरिकृष्ण प्रेमी और लक्ष्मी नारायण मिश्र आदि मुख्य नाटककार है।

जगदीश चन्द्रमाथुर एक ऐसे ही नाटककार हैं जिन्होंने न सिर्फ अपने समय के नाट्य परिवेश से उपजी सामयिक समस्याओं की पूर्ति का प्रयास किया, बल्कि नाटक और रंगमंच की शाश्वतता एवं निरन्तरता के मार्ग में आने वाली संभावित खतरों से भी जूझते रहें। अपने एकांकियों में तत्कालीन नाट्य परिवेश की सक्रियता बनाये रखने का प्रयास किया।

*हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

(2020)
PEER REVIEWED AND REFEREED JOURNAL
IIJIF GENERAL IMPACT FACTOR

आभ्यंतर

लोक, भाषा, विश्व साहित्य और समकालीन वैचारिकी का मंच

आभ्यंतर

लोक, भाषा, विश्व साहित्य और समकालीन वैचारिकी का मंच

AABHYANTAR
PEER REVIEWED AND REFEREED JOURNAL
IIJIF INDEXED-74
GIF IMPACT FACTOR- 2.0032
ISSN:2348-7771
अंक 16 जुलाई-सितंबर 2020

संस्थापक

अखिलेश कुमार द्विवेदी
(संस्कृत शिक्षक, ग्राम-हंटरगंज, जिला-चतरा, राज्य-झारखण्ड)

परामर्श

प्रो. अनिल राय
(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. मौना कौशिक
साहित्यकार और प्रख्यात कवयित्री
(सोफिया विश्वविद्यालय, बुल्गेरिया)
डॉ. विनोद तिवारी
(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रामनारायण पटेल
(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. सुधांशु शुक्ल
(हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. राजेश शर्मा
(हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. यांचा पाण्डेय
(हिंदी विभाग, रामनारायण उच्च महाविद्यालय,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, झारखण्ड)
डॉ. पारसेन्द्र पंकज
(सहा. प्रो. दिल्ली विश्वविद्यालय)

वैदिक युग की स्त्रियां : टूटता मिथक

डॉ सुशील कुमार
हिंदी विभाग, बीएन कॉलेज,
पटना विश्वविद्यालय, पटना

संभव है कि वैदिक युग से पहले स्त्रियों की स्थिति अच्छी रही हो, लेकिन अब तक प्रचलित इस धारणा पर प्रश्नचिन्ह अवश्य लगाया जा सकता है कि वैदिक युग में स्त्रियों को पुरुषों की बराबरी का दर्जा प्राप्त था। वस्तुतः वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति परवर्ती काल की अपेक्षा अच्छी नहीं कही जा सकती। अन्य अनेक बातों की तरह नारी जाति पर प्रतिबंध और सामाजिक उत्पादन से उसे अलग करके केवल संतान पैदा करने और पुरुष की विलासिता का साधन बनाने का तथ्य सामने आता है। वस्तुतः वैदिक काल में आदर्श पत्नी की स्थिति एक आज्ञाकारिणी दासी जैसी थी। ऋग्वेद में प्राप्त नारी संबंधी विवरण के अनुसार स्त्री की चंचल, मंदबुद्धि, निंदनीय अविश्वसनीय, अनिष्ट कारी और कामुक होती है। उससे पर्दा में रहने और संतान के रूप में केवल पुत्र जानने की अपेक्षा की जाती थी। उसकी कार्य दक्षता कूटने-पीसने, कताई, बुनाई, आदि से ही संबंध था। उसके भरण पोषण का भार पुरुष पर है और यदि पति नालायक निकल जाए तो पत्नी कुल्टा हो सकती थी। स्त्री पुरुष के लिए एक खेत के समान है जिसमें बीज-वपन का कार्य पुरुष करता है, इतना ही नहीं एक पुरुष अनेक पत्नियां रख सकता था। एकाधिकार स्त्री को अपनी विलासिता के लिए रखने और उन्हें गुलामी के मूल्यों में बांधने का, उन्हें पर्दे में रखने से गहरा संबंध है। यह स्थिति वैदिक काल तक आ चुकी थी। वैदिक युग में नारी की स्थिति मनु के विधान से भिन्न नहीं थी। मनुस्मृति में इस बात का स्पष्ट जिक्र भी है कि स्मृति के विधान वेद सम्मत है।

आर्य भारत के मूल निवासी थे या नहीं, इस पचड़े में ना पड़कर अब तक की प्रचलित धारणा के अनुसार उन्हें बाहर से आया मान लेते हैं। इससे वेद विधान में है स्त्रियों के प्रति क्रूरता के कारण का अनुमान लगाया जा सकता है। वैदिक समाज अपनी यात्राओं का जिक्र करते हुए इस बात पर मौन है कि उसके साथ कुछ स्त्रियां भी आई थी। जबकि सच है कि उनके साथ स्त्रियां भी थी। विविध ऋचाओं के लगभग 300 ऋषि हैं, उनमें कुछ महिलाएं भी हैं जुहू, शची, घोषा, लोमृश, लोपामुद्रा और विश्ववारा। इन स्त्रियों के साथ ही उनका बर्ताव बराबरी का रहा होगा (हालांकि इनमें भी संदेह ही है) शेष स्त्रियां, जो विजित समाज की थी, इस योग्य नहीं समझी गई आर्य स्त्रियों का भावनात्मक जुड़ाव उन पुरुषों के साथ था। अतः नजरिया भी उनके अनुकूल ही रहा होगा। वह भी अपनी भारतीय स्त्रियों को उसी निगाह से देखती होंगी जिस निगाह से उन्हें संबंधित पुरुष देखते थे। सवाल यह है कि अगर वे स्त्रियां अपना स्वतंत्र दृष्टिकोण नहीं रखती थी तो वह कैसी ऋषिकाएँ थी ? ऋग्वेद में उर्वशी पुरुरवा संवाद में उर्वशी पुरुरवा से कहती है

'न वै स्त्रैणानि सख्यानी सन्ति सालावृकणा हृदयान्येता'

यानी स्त्रियों की मैत्री और स्नेह कभी समान नहीं होते। स्त्री और वृक (भेड़िए) के स्वभाव में कोई अंतर नहीं। उक्त बात कहने वाली आर्य स्त्री हैं, जो स्त्री होते हुए भी नारी जाति के विषय में ऐसी बात कर रही है। अगर उर्वशी ऋषिका होती तो उसकी चेतनाशीलता ऐसा करने नहीं देती। एक प्रबुद्ध महिला ऐसा नहीं कह सकती वस्तुतः ऋग्वेद में आए ऐसे कथन स्त्री पात्रों के मुख से करवाए गए यह स्त्री मुख तो के रचयिता नहीं है केवल पात्र हैं। आर्यों के साथ रहने वाली स्त्रियां स्त्रियों ने नारी जाति का पक्ष नहीं लिया या संभव है अगर उसने पक्ष लेने का प्रयास भी किया हो तो वह प्रभावी नहीं रहा। आर्यों के द्वारा अपने साथ आई स्त्रियों के विषय में मौन उन्हें बहुत महत्व ना देने की ओर संकेत करता है। वस्तु स्थिति चाहे जो रही हो, लेकिन इतना तो तय है कि आर्यानियों की उदासीनता आगे चलकर उन पर भी भारी पड़ी। नारी पराधीनता की जड़ें गहरी होती चली गई और एक समय ऐसा आया कि आर्य स्त्रियां भी उसी वेद विधान के अंतर्गत आ गई। वर्तमान काल में जातिवाद को प्रश्रय देने वाली स्त्रियां इसी रहस्य को आज भी नहीं समझ रही हैं और पुरुषवादी चिंतन को बचाकर अपनी बेड़ियों को तोड़ने में देरी लगा रही है। जातिवाद ही तो नारी पराधीनता की के लिए द्वार खुलता है। आर्यों के परिवार में स्त्रियों की स्थिति का नमूना देखिए-

'कारूरह ततो भिषुगुपल प्रक्षिणी नना
'नाना धियो वसुयवो उनुगा इव तसिथमेंद्रयेंदो परि सव'

अर्थात हम बढ़ई का कार्य करने वाले के पिता और पुत्र हैं। हमारी माता और पुत्री जौ पीसने का कार्य करती है। हम सभी विभिन्न कार्य करने वाले हैं, जिस प्रकार ग्वाला गांव की गौ की सेवा करता है, हे सोम ! उसी प्रकार हम तेरी सेवा करते हैं। तू इंद्र के निमित्त प्रवाहित होता है। इस मंत्र को प्रायः वैदिक समाज में जातिवाद नहीं था को प्रमाणित करने के संबंध में उद्धृत किया गया है एक ही परिवार के लोग अलग-अलग धंधा करते थे ध्यान से पढ़िए इस मंत्र में इस बात का प्रमाण नहीं मिलता। स्तुति वैदिक समुदाय का धंधा नहीं थी। वह देवोपासना तथा धार्मिक क्रिया मात्र थी। धंधा तो वैद्य करता था स्त्री सोम कूटती है। इसे धंधा मानना गलत होगा। स्त्री न तो स्तुति करने वाली दिखलाई गई हैं और वेद का काम करती हुई, उसका काम मात्र कूटने पीसने का ही है। ऋग्वेद के पहले मंडल के 28 वें सूक्त से भी घर में रहने वाली स्त्री की स्थिति का पता चलता है। इसमें इंद्र को उस घर में बुलाया जाता है जिसमें स्त्री मुसल चलाती है, सिलबट्टी से पिसती है, ओखली में कूटती है, मथानी से पे मथती है। इतना ही नहीं पति के बुलाने पर उसे शीघ्र उपस्थित होना है। पति के पुकारने पर जैसे पत्नी शीघ्र उपस्थित हो जाती है उसी प्रकार अहोरात्र देवता मेरे पुकारने पर आएं। यहां स्त्री की उसकी यह आज्ञाकारी किसी दासी से कम नहीं थी। भारतीय समाज में यह स्थिति आज भी बनी हुई है। ग्रामीण समाज में स्त्रियां प्रायः अपनी पतियों से इसलिए मार खाती हैं, क्योंकि उन्हें अपने पति की आज्ञा का पालन शीघ्र से नहीं किया। वैदिक समाज में स्त्रियों के साथ दासियों से व्यवहार ही नहीं किया जाता था, बल्कि उनकी बर्बरता पूर्वक हत्या भी की जाती थी। हत्या करने वाला वस्त्र हीन असहाय और नवजात शिशु के साथ-साथ उसकी हत्या करने में हिचकिचाहट भी नहीं था

 ISSN:2348-7771

The Indian Economic Journal

JOURNAL OF THE INDIAN ECONOMIC ASSOCIATION

Volume - 2 • Special Issue • December 2022

DRIVERS O[illegible] ECONOMIC GROWTH

- Energy [illegible]
- Gross Capital Formation
- Remittance Inflow
- International Trade
- Foreign Direct Investment
- Government Final Consumption Expenditure
- Total Factor Productivity
- Demographic Dividend
- Human Capital Development
- Research & Development, Technology & Know-how
- Automation and Digital Connectivity
- Urbanisation
- Efficient Use of Resources
- Trade Surplus

31. **Human Capital Development: A Study**
Divya Priyadarshi
Rakesh Kumar 310

32. **URBANIZATION**
Lakshmi Chatterjee 315

33. **Micro Enterprises: A Means of Employment in Bihar**
Ranjeet Kumar 325

34. **The Role of Microfinance in Rural Women Development – A case study of Shikaripura Taluk**
Netravathi 333

35. **Drivers of High Economic Growth - An Appraisal**
Angrej Singh 347

36. **Role of FDI In Indian Economy**
Rahul Moreshwar Labhane 354

37. **The Monetary Policy during Shocks: An Analysis of India's Response to COVID-19**
Amit Kumar 360

38. **Self-Reliance of Indian Economy - A Myth or A Reality?**
Suchitanand k. Malkapure 370

39. **Foreign Direct Investment (FDI) in: A Review on Trends and Patterns of Capital Inflow in India**
Asha H S
B N Harisha 375

40. **Trends in Inequality, Poverty and Hunger**
Sudhir Kumar 383

41. **An empirical analysis of Indian Industry: Production function Approach**
M Aruna
IRS Sarma 389

42. **The Impact of COVID-19 on the Volume of Labour remittances**
Madhu, G. R
Uma, H.R 397

43. **Consumption of Food and Data: A driving force behind economic growth**
Dilip Singh
Sharad Tiwari 408

44. **Institutional Changes In Agriculture In Bihar**
Shashi Kumari 417

45. **An analysis on Reformation of PDS in India**
G. Rajaram
U. P. Reshmi 422

46. **A study on the relationship between technology spread effect on tertiary sector of Bangalore in Karnataka state of India**
Suha sehar .N 426

47. **A Study on Human Capital Development and Economic Growth in India**
Growth in India
P. Chennakrishnan 432

48. **An Overview Of Sri Lanka Economic Crisis 2022**
Prity Kumari 437

49. **Trends and Pattern of Urbanization in Bihar during 1961-2011 : An Analytical Study**
Brajesh Pati Tripathi 439

Trends and Pattern of Urbanization in Bihar during 1961-2011 : An Analytical Study

Brajesh Pati Tripathi*

Introduction :

Urbanization has been defined as a form of social transformation from the traditional rural societies to modern urban communities, which is a long town and continuous process. Urbanization does not only shifts the population from rural to urban area to changes the whole social fabric and demographic characteristics like occupation, culture lifestyle and whole behavior. Occupational change agricultural performance especially in production of wheat and rice in districts of Bihar has in one way on the other way must have promoted urbanization. Therefore urbanization reflects the transition from the agricultural economy to the industrial and sources based economy which help in building infrastructure as well as provide access to at least basic facilities to the residents.[1]

Level of urbanization determines the level of economic development in modern world. It also determine the level of transition between agricultural activities and industrial growth. Urbanization pushes or gives exchanges among sources, capital, labour, information technology and social transactions. Finally we can say that urbanization occurs due to movement of people from rural to urban areas, which reads to the growth in the size of urban population, which may also lead to other changes like land use, economy and culture. Urban living is associated with higher level of literacy rate and educational status which ultimately afforts the better health, low fertility and mortality rate. Apart from this there is a greater access to social services and greater opportunities to social and political participation. As the urbanization continues there have been some negative impact too, like poor sanitation, communicable diseases, poor nutrition and poor housing conditions which have directly impact on the quality of life of the people living in the urban areas. The process of urbanization in developed countries has been very slow and steady but in developing countries like India it is very fast and is accompanish by rapid growth in services sectors not by industrialization. In a state like Bihar, urbanization is a recent phenomena and is still unfolding in spite of the fact that urbanization has been considered as an inevitable part of economic development. In spits of this fact, urbanization is clearly a result of the growth process and urbanization industrialization, but there are other factors too which derives the process of urbanization like exchange of goods, services, labour capital and information technology and exchange of social phenomena. In the presence of agriculture economy and absence of non-agriculture economy. Urbanization in Bihar is depressing, especially when we consider the plain topography of the whole state, an ideal geographical conditions for the development of cities. In Bihar only 11.3 percent people i.e. 1.176 crore (according to census2011) live in urban areas which is much smaller than the all India average of 31.2% Urbanization. Bihar has 8.65% of the total population of the country, but it has only 3.1% of the total urban population of the country. Between 20012011, the growth in the urban population increased merely by 8% from 10.5% in 2001 to 11.3% in 2011 and if we consider longer period i.e. between 1961 to 2011 the increase in urban population is only 3.9% from 7.4%. In 1961 to 11.3% in 2011.[2]

Objective of the Study :– The main objectives of this research paper have been following :

(i) To analyse the trends of urbanization in India and Bihar since 1961 to 2011.

(ii) To analyse the spartio temporal variation of urbanization at distinct level (2001 to 2011)

* Professor & Head, Department of Economics, Patliputra University, Patna (Bihar)